

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....



डॉ. मुकेश

एडिशनल कमिशनर
राज्य कर विभाग मेरठ
मो.: 7235002925

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....



अजय बौद्ध

असिस्टेंट डायरेक्टर टैक्सपेयर सर्विस
सी.बी.आई.सी., दिल्ली
मो.: 9936579655

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....



राजीव कुमार चौधरी

वरिष्ठ लेखा एवं वित्त अधिकारी
नगर निगम वाराणसी
मो.: 9897454089

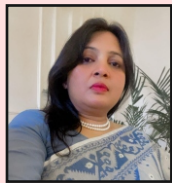
स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....



जय प्रताप

डिप्टी लेबर कमिशनर
कानपुर
मो.: 9935388216

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....



सुनीता बौद्ध

अध्यक्ष
समाज कल्याण सेवा समिति

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....



अमरेन्द्र प्रताप सिंह

भगवंत नगर विधान सभा कांग्रेस कमेटी
जिला उन्नाव
मो.: 9839119911

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....



रेखा सोनकर

प्रशासनिक अधिकारी
श्रमायुक्त कार्यालय, कानपुर
मो.: 9555881981

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....



बालक राम

प्रशासनिक अधिकारी
लेबर कमिशनर अपील (IR रिट), कानपुर
मो.: 9415484204

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....



रामस्वरूप

प्रशासनिक अधिकारी
उपाध्यक्ष रा0क0स0 परिषद, कानपुर नगर
कार्यालय श्रमायुक्त उ0प्र0 जी0टी0 रोड कानपुर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....



राजेश वर्मा

व्यवसाय विकास बीमा
सखी मण्डल कार्यालय कानपुर
मो.: 9450906326

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....



दिनेश कुमार गौतम

प्रधान सहायक
नलकूल मण्डल, कानपुर
मो.: 8737045789

मेरा भारत मेरी पहचान
देशप्रेम पहचान है, यही हमारी शान है
सत्ता हस्तांतरण दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ
Warm wishes on the Day
of the Transfer of Power.
(Transfer of Power) या सत्ता का हस्तांतरण
वह ऐतिहासिक प्रक्रिया है जिसके तहत 15 अगस्त
1947 को अंग्रेजों ने भारत की संप्रभुता यहाँ के
भारतीय नेतृत्व को सौंपी थी
Member, INDWF
Yours obediently, Siyaram, Member, Local Productivity Council, OEF Kanpur.

RNI No. : UPHIN-2009/29369

डाक पंजीकरण : KANPUR HO/002/2025-27
प्रधान डाकघर कानपुर-डाक प्रेषण दिनांक 29/30

वार्षिक
सदस्यता शुल्क
100/-

www.dbindia.org.in

द्रविड़ भारत

सामाजिक परिवर्तन का मासिक पत्रिका



सर्व समाज का अग्रगण्य

अगस्त-2026

वर्ष - 18

अंक : 07

मूल्य : 5/-



संत कबीर दास



संत रविदास जी



चासीदास



बिरसामुण्डा



भैरव उमास्वामी



छत्रपति शाहूजी महाराज



सन्त गाडगे



महात्मा ज्योतिबा फुले



नारायण गुरु



सार्धिजी वाई फुले



केशीराम

Youtube पर @dravid bhara hindi को Subscribe करें और दबायें।

गणतंत्र आर्मी

उद्देश्य - सामाजिक गणतंत्र स्थापित करना है।

संस्थापक सदस्य

इंजी. के. के. लाल (9336765798)

कमलेश प्रजापति (बाँदा) (9452464646)

उमेश्वरी देवी (एडवोकेट) (9005204074)

संतोष लोधी (8808615697)

के. के. श्रीवास्तव (9839263541)

सियाराम (9794352284)



स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....



ई. विनोद कुमार

सहायक अभियन्ता चतुर्थ, कानपुर
मो.: 8840572378

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....



**सम्पादक की
कलम से**

उमेश्वरी देवी

द्रविड़ भारत को 18 वर्षों से निरन्तर प्रकाशित करने में आप सभी के सहयोग के लिए आप सभी सहयोगियों एवं पाठक गणों को बहुत-बहुत साधुवाद। आप सभी का साथ एवं सहयोग ऐसा ही मिलता रहे ताकि, बाबा साहब के विचारों को आगे बढ़ा सके जय भीम नमो बुद्धाय।

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....

रवि प्रताप दोहरे

वर्क एजेंट
निर्माण खण्ड (भवन), लोक निर्माण विभाग
कानपुर नगर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....



आशाराम त्यागी

पूर्व जिला महासचिव, बी.एस.पी. जनपद महोबा



किरन त्यागी

समाज सेविका, चरखारी
मो.: 9005874795

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....

प्रो. (डॉ.) राम प्यारे

सदस्य उ. प्र. लोक सेवा आयोग, प्रयागराज, उ. प्र.
मो.: 9140967616

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....



इं. रवि सागर

अधिशाली अभियन्ता
नलकूल खण्ड प्रथम
कानपुर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....

विजय गौतम

लेखाकार
कोषागार कानपुर नगर
मो० : 9696222033

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....



विपिन सोनकर

क्लर्क
अपर श्रमायुक्त, कानपुर क्षेत्र
कानपुर नगर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....

भूष सिंह

लिपिक
कानपुर विकास प्राधिकरण, कानपुर
मो० : 9455646040

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....



प्रमोद कुमार

मेट
कानपुर विकास प्राधिकरण, कानपुर
मो.: 9305056585

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....

आनन्द मोहन

सेवानिवृत्त संयुक्त आयुक्त
हयकरघा एवं वस्त्रोद्योग निदेशालय, कानपुर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....

आर.एल. मौर्य

सहायक सचिव (ग्रा.सं.प्र./दावा)
भा.जी.बी.निगम उ.म.क्षेत्र कार्यालय कानपुर
मो०. 9450691155



समस्त सम्मानित क्रमिकों एवं नगरवासियों को
स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....

मेवालाल

सेवानिवृत्त प्रधान सहायक
अध्यक्ष मिनिस्ट्रियल एसो. लोक निर्माण विभाग, कानपुर क्षेत्र
सम्प्रेक्षक रा.क.स.प.कानपुर



स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....

जगजीवन राम

(प्रशासनिक अधिकारी)
मण्डलीय अध्यक्ष
मो.: 9450134953
अखिल भारतीय अनु. जाति जनजाति एवं बुद्धिष्ट
भारतीय जीवन बीमा निगम कर्मचारी कल्याण संघ

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....



अर्चना कैथवार

प्रशासनिक अधिकारी (उपाध्यक्ष)
लेबर डिपार्टमेंट मिनिस्ट्रियल एम्प्लाइज एसोसिएशन उ०प्र०
क्लर मिनिस्टर उ.प्र. राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....

अखिलेश गौतम

लिपिक
कानपुर विकास प्राधिकरण, कानपुर

STARS TRAVEL
FLY WITH US



**EXPLORE
THE WORLD**

Your Journey. Our Expertise.
Memories that last a lifetime!

OUR SERVICES



**AIRLINE
TICKETING**
Best fares on
all major airlines



**HOLIDAY
PACKAGES**
Domestic & International
customized packages



**TRAVEL
INSURANCE**
Secure your trip
with best coverage



**CAR
RENTAL**
Wide range of cars
at best prices



BOOK NOW
Your next adventure awaits!



Call Us
+91 89539 06999
+91 98391 19556



Email Us
suyog@stars-travels.com



Visit Our Website
www.stars-travels.com





गणतंत्र आर्मी

गणतंत्र आर्मी का संगठन द्रविड़ भारत समाचार पत्रिका द्वारा संचालित किया जा रहा है।

गणतंत्र आर्मी शब्द की व्याख्या -

गण — जनता या समूह (भिक्षुक)

तंत्र — ज्ञान का विस्तार करने वाला

“तन्यते विस्तार्यते ज्ञानम अनेन इति तन्त्रम्”

वह विद्या जो ज्ञान का विस्तार करे

और विधि द्वारा रक्षा करने वाला शास्त्र है।

आर्मी — ARMY

A - Alert

R - Regular

M - Mobility

उद्देश्य - सामाजिक गणतंत्र स्थापित करना है।

संस्थापक सदस्य

इंजी. के. के. लाल (9336765798)

उमेश्वरी देवी (एडवोकेट) (9005204074)

के. के. श्रीवास्तव (9839263541)

कमलेश प्रजापति (बाँदा) (9452464646)

संतोष लोधी (8808615697)

सियाराम (9794352284)

RNI No. : UPHIN-2009/29369

संपादक : उमेश्वरी देवी, मो.: 9005204074
संरक्षक मण्डल : मा. रामदीन अहिरवार (महोबा),
मा. राम अवतार चौधरी (सहा.अभि. जलकल विभाग),
मा. छविलाल वर्मा (चरखारी), मा. हरिनाथ राम
(दिल्ली), मनीष कुमार मो. 9415053621
राज्य ब्यूरो प्रमुख उत्तर प्रदेश :
सुनील कुमार, ढेलवा, गाजीपुर (उ.प्र.),
मो.: 9935363730, 9170836363
योगेन्द्र कुमार (ब्यूरो चीफ चित्रकूट मण्डल)
मो.: 8299162841
हमीरपुर ब्यूरो प्रमुख -
रघुवर प्रसाद, मो.: 9793739030
क्षेत्रीय सम्पादकीय कार्यालय :
40/69, डी-5, श्यामलाल का हाता, परेड,
कानपुर (उ.प्र.), मो. : 8756157631
ब्यूरो प्रमुख लखनऊ मण्डल :
राजकुमार, उन्नाव
मो.: 9889273743, 9392660070
हरियाणा राज्य :
डा. रमेश रंगा, ग्राम-सराय, औरंगाबाद, पो.-
बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), 09416347052
कानूनी सलाहकार : एड. रामप्रकाश अहिरवार, एड.
यू.के. यादव, मोती लाल वर्मा, एड. विजय बहादुर सिंह
राजपूत, एड. रमाकान्त धुरिया, रामऔतार वर्मा, एड.
सुशील कुमार, कानपुर
मध्य प्रदेश राज्य : पुष्पेन्द्र कुमार
कार्यालय : ग्रा. व पो.-रामटौरिया, जिला-छतरपुर
छत्तीसगढ़ राज्य : ब्यूरो प्रमुख
रमा गजभिये, मो.: 7828273934
दिल्ली प्रदेश : C/o अनिल कुमार कनौजिया C-260,
हर्ष विहार, हरिनगर एक्सटेंशन पार्ट-III, बदरपुर, नई
दिल्ली-44, मो. : 09540552317
राजस्थान राज्य : रघुनाथ बौद्ध, श्याम रघु फुट वियर,
दुकान नं.-1, गणेश मार्केट, पुलिस चौकी के सामने,
अलवर, जिला-अलवर-301001,
मो. : 09887512360, 0144-3201516
बाबूलाल बौद्ध, अलवर, मो.-08058198233
संपादकीय/विज्ञापन प्रसार/पंजीकृत कार्यालय :
ग्रा व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला-महोबा (उ.प्र.)
मो. : 9005204074, 8756157631
E-mail : dravinbharat1@gmail.com
प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी
उमेश्वरी देवी द्वारा ग्रा. व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला महोबा
से प्रकाशित व श्रेय ऑफसेट प्रा. लि., 109/406, नेहरू
नगर, कानपुर, 84/1, बी, फजलगंज, कानपुर से मुद्रित

प्रकाशित पत्रिका में प्रकाशित लेख, सामग्री, में संपादक की
सहमति अनिवार्य नहीं है। इसमें किसी भी प्रकार का दावा या
विचार मान्य नहीं होगा। लेख के विवादित होने पर लेखक ही
उत्तरदायी होगा समस्त विवादों का निपटारा महोबा न्यायालय
में होगा पत्रिका का संपादन एवं संचालन पूर्णतयः अवैतनिक
एवं अव्यवसायिक है।

संपादक : उमेश्वरी देवी, मो.: 9005204074
संरक्षक मण्डल : मा. रामदीन अहिरवार (महोबा),
मा. राम अवतार चौधरी (सहा.अभि. जलकल विभाग),
मा. छविलाल वर्मा (चरखारी), मा. हरिनाथ राम
(दिल्ली), मनीष कुमार मो. 9415053621
राज्य ब्यूरो प्रमुख उत्तर प्रदेश :
सुनील कुमार, ढेलवा, गाजीपुर (उ.प्र.),
मो.: 9935363730, 9170836363
योगेन्द्र कुमार (ब्यूरो चीफ चित्रकूट मण्डल)
मो.: 8299162841
हमीरपुर ब्यूरो प्रमुख -
रघुवर प्रसाद, मो.: 9793739030
क्षेत्रीय सम्पादकीय कार्यालय :
40/69, डी-5, श्यामलाल का हाता, परेड,
कानपुर (उ.प्र.), मो. : 8756157631
ब्यूरो प्रमुख लखनऊ मण्डल :
राजकुमार, उन्नाव
मो.: 9889273743, 9392660070
हरियाणा राज्य :
डा. रमेश रंगा, ग्राम-सराय, औरंगाबाद, पो.-
बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), 09416347052
कानूनी सलाहकार : एड. रामप्रकाश अहिरवार, एड.
यू.के. यादव, मोती लाल वर्मा, एड. विजय बहादुर सिंह
राजपूत, एड. रमाकान्त धुरिया, रामऔतार वर्मा, एड.
सुशील कुमार, कानपुर
मध्य प्रदेश राज्य : पुष्पेन्द्र कुमार
कार्यालय : ग्रा. व पो.-रामटौरिया, जिला-छतरपुर
छत्तीसगढ़ राज्य : ब्यूरो प्रमुख
रमा गजभिये, मो.: 7828273934
दिल्ली प्रदेश : C/o अनिल कुमार कनौजिया C-260,
हर्ष विहार, हरिनगर एक्सटेंशन पार्ट-III, बदरपुर, नई
दिल्ली-44, मो. : 09540552317
राजस्थान राज्य : रघुनाथ बौद्ध, श्याम रघु फुट वियर,
दुकान नं.-1, गणेश मार्केट, पुलिस चौकी के सामने,
अलवर, जिला-अलवर-301001,
मो. : 09887512360, 0144-3201516
बाबूलाल बौद्ध, अलवर, मो.-08058198233
संपादकीय/विज्ञापन प्रसार/पंजीकृत कार्यालय :
ग्रा व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला-महोबा (उ.प्र.)
मो. : 9005204074, 8756157631
E-mail : dravinbharat1@gmail.com
प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी
उमेश्वरी देवी द्वारा ग्रा. व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला महोबा
से प्रकाशित व श्रेय ऑफसेट प्रा. लि., 109/406, नेहरू
नगर, कानपुर, 84/1, बी, फजलगंज, कानपुर से मुद्रित

प्रकाशित पत्रिका में प्रकाशित लेख, सामग्री, में संपादक की
सहमति अनिवार्य नहीं है। इसमें किसी भी प्रकार का दावा या
विचार मान्य नहीं होगा। लेख के विवादित होने पर लेखक ही
उत्तरदायी होगा समस्त विवादों का निपटारा महोबा न्यायालय
में होगा पत्रिका का संपादन एवं संचालन पूर्णतयः अवैतनिक
एवं अव्यवसायिक है।

वर्ष - 17

अंक : 05

जून-2025

मूल्य : 5/-

क्रम सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
1.	सम्पादकीय	3
2.	महाराष्ट्र के नवजागरण में सन्त गाडगे का योगदान	6
3.	शाहू जी महाराज का समतावादी शासन	8
4.	प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति का सिद्धान्त एवं मधुमेह रोग व निवारण	10
5.	निःशुल्क कोर्स अनुसूचित जाति/जनजाति हेतु	14
6.	जल संरक्षण के हित में उपभोगताओं से अपील	15

विज्ञापन हेतु
CBC NEWS PAPER CODE : 134545

मिशन को बढ़ाने के लिए सहयोग करें -
भारतीय स्टेट बैंक
पी.पी.एन. मार्केट, कानपुर
खाता सं.-33496621020
IFSC CODE-SBIN0001784

Youtube पर @dravid bharat hindi को
Subscribe करें और दबायें।

2

15 अगस्त

आखिर देश का विभाजन हुआ। 14 अगस्त मुहम्मद अली जिन्ना पाकिस्तान के पहले गवर्नर जनरल और 15 अगस्त को जवाहर लाल नेहरू हिन्दुस्तान के पहले प्रधानमंत्री बने।

गांधी की सुधारवादी नीतियों और सौदेबाजी का यह अनिवार्य परिणाम था। जन–संघर्षों को बार–बार टालने के बाद कांग्रेस नेताओं के पास देश की समस्या का और कोई हल नहीं रह गया था। उन्हें यह कड़ुवा घूट अपनी इच्छा के विरुद्ध पीना पड़ा।

इस कड़ुवे घूट को– इस समझौते को, बड़े धूम–धड़क्के से आजादी की संज्ञा दी गई। लेकिन आजादी जो मिली, उसे हमने पिछले चालीस वर्ष में अच्छी तरह देख–परख लिया है। उम्मीदें जो बंधाई गई थीं, उन पर ओस पड़ गई और जनता ने जो सपने संजोये थे, वे धूल में मिल गये।

14 और 15 अगस्त की दरम्यानी रात को 12 बजे से कुछ क्षण पहले जवाहर लाल नेहरू ने भारतीय संसद में घोषणा की थी :

“बहुत बरस हुए हमने भाग्य से, जो वक्त मुकर्रर किया था, वह अब आ गया है, जब हम अपनी प्रतिज्ञा को यदि पूरी तरह नहीं तो भी बहुत हद तक पूरा करेंगें।”

और प्रतिज्ञा को यों दोहराया था :

“जब आधी रात का घंटा बजेगा और दुनिया सोती होगी, तब भारत स्वतंत्र होकर नई जिंदगी हासिल करेगा। इतिहास में ऐसा क्षण कभी–कभी ही आता है जब हम प्राचीनता से नवीनता की तरफ क़दम उठाते हैं। जब एक ज़माना ख़त्म होकर लम्बे अर्से से दबाई गई राष्ट्र की आत्मा मुखरित होती है। ऐसे गंभीर मौक़े पर हम भारत, भारत की जनता और उनसे भी बढ़कर मानवता की सेवा के लिए सब–कुछ न्यौछावर करने की प्रतिज्ञा करते हैं। यह भविष्य आराम और विश्राम का नहीं वरन् अनेक बार ली गई प्रतिज्ञाओं और आज ली जाने वाली प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए लगातार कोशिश करने का है। भारत की सेवा का मतलब करोड़ों पीड़ितों की सेवा है। इसका मतलब, अशिक्षा और अवसर की असमानता का ख़ात्मा। हमारी पीढ़ी के सबसे बड़े आदमी की आकांक्षा थी कि हर आंख का आंसू पोछ दिया जाये। शायद यह हमारी ताकत के बाहर हो; लेकिन जब तक आंसू और वेदना रहेगी हमारा काम पूरा नहीं होगा। जिस भारतीय जनता के हम नुमाइंद हैं, उससे हम अपील करते हैं कि वह हमें विश्वास और भरोसे के साथ इस महान् कार्य में सहयोग दे। यह वक्त ओछी और नुक़सानदेह आलोचना का नहीं है और न दूसरों की बुराई और नुक़ताचीनी का। हमें स्वतंत्र भारत की ऐसी आलीशान इमारत बनाना है, जिसमें भारत के हर बच्चे के रहने की जगह हो।”

कैसे सुंदर लफ़ज़ हैं। पढ़ते जाइये और बोलने वाले को भी भरकर दाद देते जाइये। जवाहरलाल नेहरू और सभी गांधीवादी इसी लफ़फ़ाजी से बहलाते–बहकाते और भारतीय जनता की ही नहीं समूची मानवता की सेवा की डींग हांकते आये हैं।

लेकिन पिछले चालीस साल के अर्से में हम देख चुके हैं कि आंसू पुछे नहीं बल्कि लोगों की आंखे आज आंसुओं से ज्यादा तर हैं और वेदना कम होने के बजाय और बढ़ी है, यहां तक कि बर्दाश्त से बाहर हो गई है।

ऐसा क्यों हुआ ?

इस सवाल का सही जवाब पाने के लिए ‘प्राचीनता से नवीनता की तरफ उठाये गये इस क़दम को’–15 अगस्त के समझौते को समझना होगा, जिसका नाम आजादी रखकर हमें धोखा दिया गया। समझना इसलिए जरूरी है कि हम कहीं आइंदा भी सुंदर लफ़फ़ाजी द्वारा ठगे न जायें।

26 जुलाई, 1920 को कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की दूसरी कांग्रेस में राष्ट्रीय और औपनिवेशिक मामलों के कमीशन की रिपोर्ट में लेनिन ने कहा था :

“.....हमें कम्युनिस्ट होने के नाते, उपनिवेशों में बुर्जुआ स्वतंत्रता आंदोलनों का तभी समर्थन करना चाहिए और हम तभी समर्थन करेंगे भी, जब वे वास्तव में क्रांतिकारी हों और उनके प्रतिनिधि क्रांतिकारी भावना से कृषकों और शोषित जनता को प्रशिक्षित करने के हमारे कामों में बाधा न डालें। यदि यह परिस्थिति नहीं पाई जाती तो इन देशों के कम्युनिस्टों को सुधारवादी बुर्जुआ के विरुद्ध संघर्ष करना चाहिए, जिसके अंतर्गत दूसरी इंटरनेशनल के नायक भी आते हैं। औपनिवेशिक देशों में सुधारवादी पार्टियों पहले ही मौजूद हैं। कभी–कभी तो उनके प्रतिनिधि अपने को सामाजिक जनवादी और समाजवादी भी कहते हैं।”

उपनिविशों में बुर्जुआ सुधारवादी आंदोलन साम्राज्यवाद खुद चला देता है ताकि शोषित, पीड़ित जनता को क्रांति के पथ पर चलने से रोका जा सके और सुधारवादी आंदोलन के जरिये अपने ही ढंग के बुर्जुआ नेता तैयार किये जायें।

हमारे देश में भी ब्रिटिश साम्राज्यवादियों ने इसी नीति को अपनाया। हमने देखा कि नेशनल कांग्रेस खुद अंग्रेजों ने संगठित की थी। बीस साल तक वह नौकरियों के भारतीयकरण के प्रस्ताव पास करती रही। इसके बाद जब उसने क्रांतिकारी रूप धारण करना शुरू किया और अंग्रेजों ने देखा कि अब बुर्जुआ वर्ग भी सिर्फ़ प्रस्ताव पास करके संतुष्ट नहीं रह सकता तो उसकी ओर 1909 में सुधारों के नाम पर पहला टुकड़ा फेंका। माडरेटों का एक बड़ा गिरोह बड़ी तेजी से इस टुकड़े की तरफ लपक गया। सर आगा ख़ाँ के नेतृत्व में मुस्लिम लीग का एक प्रतिनिधिमंडल वायसराय से मिला और कहा कि इस टुकड़े में हमारा भाग मुकर्रर कर दिया जाय वरना यह सारे का सारा हिन्दू खा जायेंगे। हमारे हाथ कुछ नहीं लगेगा।

अंग्रेजों ने मुसलमानों को पृथक् प्रतिनिधित्व का अधिकार दे दिया और राष्ट्रीय आंदोलन में सांप्रदायिक फूट की नींव डाल दी।

युद्ध के बाद 1919 में देश की राजनीति में जब

सम्पादकीय

फिर क्रांतिकारी उभार आया तो अंग्रेजों ने फिर दूसरा टुकड़ा सुधारों के नाम पर फेंका। बहुत से बुर्जुआ कांग्रेसी नेता फिर इसकी ओर लपके। खुद गांधी ने, उन्हें अंग्रेज की नेकनीयती का सबूत मानकर, कांग्रेस को उन्हें सफल बनाने का मशविरा दिया था।

मुसलमानों ने अपना हिस्सा पहले ही अलग बंटवा

लिया था, अब पंजाब में सिखों ने मांग की कि इस टुकड़े में हमें भी हमारा हिस्सा अलग बांटकर दे दिया जाय क्योंकि हिन्दू और मुसलमान दोनों बड़े भाइयों से हमारी पट्टी नहीं बैठती । अंग्रेजों ने सिखों का हिस्सा भी अलग कर दिया। हमारी राष्ट्रीयता बराबर खंडित होती रही।

1930–34 के लंबे संघर्ष के बाद अंग्रेज ने तीसरा बड़ा टुकड़ा फेंका । इसके लिए कांग्रेस ने रद्द और कबूल की दोहरी नीति अपनाई और धीरे–धीरे मंत्रिमंडल बनाकर कुर्सियों पर जा बैठी। इन मंत्रिमंडल के कारनामों की हम एक झलक देख चुके हैं। लेकिन साम्राज्यवादी औपनिवेशिक ढांचे में पद ग्रहण करने का एक दूसरा पहलू भी है। जवाहरलाल के अपने शब्दों में, “फिरकावार सवाल पर उसका बहुत बुरा असर पड़ा और उसकी वजह से बहुत से मुसलमानों में शिकायत और अलहदगी का सवाल पैदा हुआ। इसमें बहुत–से प्रतिक्रियावादी तत्त्वों ने फायदा उठाया और उन्होंने कुछ ख़ास गिरोहो में अपनी स्थिति मजबूत कर ली।” (हिन्दुस्तान की कहानी) ।

मुस्लिम लीग कुछेक सालों ही में इतना जोर पकड़ गई उसने 1940 में बाकायदा प्रस्ताव पास करके पाकिस्तान की मांग पेश कर दी। भौगोलिक, आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टि से यह मांग एकदम अव्यावहारिक और हास्यास्पद जान पड़ती थी। गांधीजी ने कहा था कि अगर पाकिस्तान बना तो वह मेरी लाश पर बनेगा। सत्यवादडी हरिश्चन्द्र के इस आधुनिक अवतार ने तो यह भी कहा था कि 31 दिसम्बर 1921 तक स्वराज्य न मिला तो आप मुझे जीवित नहीं पायेंगे। लेकिन कहने–भर से क्या होता है? आखिर पाकिस्तान बना और गांधी के आशीर्वाद से कांग्रेस ने उसे स्वीकार किया ।

दरअसल यह आजादी नहीं 1935 के एक्ट के बाद सुधारों की चौथी और आखिरी किश्त थी, जो 1946 के क्रांतिकारी उभार के दबाव तथा युद्ध से अपनी कमर टूट जाने के कारण ब्रिटिश साम्राज्यवाद को देनी पड़ी और जॉन की जगह गोविन्द को गद्दी पर बिठा दिया गया ।

हम अगर जॉन की जगह गोविन्द को गद्दी पर बिठानें की प्रक्रिया को भी देख लें तो स्थिति स्पष्ट हो जायेगी ।

इण्डियन सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेम्बली में यूरोपियन ग्रुप के नेता पी.जी. ग्रिफ़थ्स ने 24 जून, 1947 को अपने भाषण में कहा था : “बहुत–से लोगों का मत है कि ब्रिटिश कैबिनेट मिशन के आने से पहले हिन्दुस्तान क्रान्ति के कगार पर

Youtube पर @dravid bharat hindi को Subscribe करें और दबायें ।

द्रविड़ भारत

3

अगस्त-2026

खड़ा था। कैबिनेट मिशन ने अगर इस खतरे का अंत नहीं किया तो इसे टाल अवश्य दिया हैं।’’

1946 का क्रांतिकारी उभार न सिर्फ ब्रिटिश साम्राज्यवादियों के लिए बल्कि हमारे अपने देश के इजारेदार पूंजिपतियों और सामंतवादी तत्त्वों के लिए भी जबर्दस्त खतरा क्या और उसे टालने में कांग्रेस और मुस्लिम लीग के नेताओं ने जनता की आंखों में धूल झोंकी और ब्रिटिश सरकार को पूरा सहयोग दिया।

अब इसी बात के दूसरे पहलू यानी युद्ध के बाद ब्रिटिश सरकार की अपनी स्थिति क्या थी, उसे भी देखिए। 5 मार्च, 1947 को स्टेफर्ड ने ब्रिटिश पार्लियामेंट में कहा था कि ब्रिटिश सरकार के समक्ष दो ही विकल्प हैं : (1) सेना की शक्ति में बहुत अधिक वृद्धि करके हिन्दुस्तान में अपना प्रत्यक्ष शासन बनाये रखे अथवा (2) 1947 के निर्णय के अनुसार राजनीतिक सत्ता हस्तांतरित कर दे । फिर उसने स्वीकार किया कि ब्रिटिश सरकार सेना के बल से प्रत्यक्ष शासन बनाये रखने में समर्थ नहीं है। अतएव अंग्रेज ने देश का बंटवारा करके दोनों तरफ बड़े पूंजीपतियो और सामंतवादी तत्त्वों के हाथ में राजनीतिक सत्ता सौंप दी अर्थात् जॉन की जगह

गोविन्द को गद्दी पर बिठा दिया। प्रशासन का स्वरूप वही रहा, ये दोनों शोषक वर्ग जन–क्रांति को खून में डुबोने और साम्राज्यवाद के हितों की रक्षा करने के लिए उसके छोटे हिस्सेदार बन गये ।

1969 गांधी की जन्म–शताब्दी का वर्ष था, जिसकी तैयारी पिछले साल ही शुरू हो गई थी। इस सिलसिले में डॉ. राधाकृष्ण ने ‘महात्मा गांधी–100 वर्ष’ नाम की एक पुस्तक सम्पादित की है, पुस्तक में एक लेख ब्रिटिश प्रधानमंत्री हेरल्ड विल्सन का भी है। उसने लिखा है :

“महात्मा गाँधी द्वारा अहिंसा पर जोर देने के कारण दोनों पक्ष की सहमति से भारत को आज़ादी मिली। न किसी में विजय की भावना थी और न पराजय की। ब्रिटेन भी इस निर्णय से संतुष्ट था और राष्ट्रमंडल में एक नए बड़े सदस्य का स्वागत करने को उत्सुक था। यह सब भारत के राष्ट्रपिता के कारण हुआ, जिसने 20 वर्ष पहले पहली बार हमारे देश की यात्रा की थी और हमें भली प्रकार समझा था ।

भारत–ब्रिटेन मैत्री की जो सुदृढ़ नींव उनहोंने डाली है, उसके लिए हम अपने देश में उनके आभारी और ऋणी है।’’

ब्रिटिश पत्रकार तथा लेखक एडवर्ड टामसन से जवाहरलाल नेहरू से अपनी एक भेंट प्रकाशित की थी, जो 1935 के इंडिया एक्ट के बारे में थीं । लेख यों शुरू होता है :

“नेहरू के चरित्र के मेरे अध्ययन से मुझे लगा कि उनकी रुचि मुख्य रूप से हिन्दुस्तान को ‘साम्राज्य’ से स्वतंत्र कराने में नहीं है।

अगर उन्हें यह विश्वास हो जाय कि साम्राज्य वास्तव में बराबरी के राष्ट्रों का एक परिवार है, जिसके अलग–अलग सदस्यों को अपने विचारों को रखने का पूरा अधिकार हो, तो वह इस बात पर राजी हो जाएंगे कि हिन्दुस्तान इन राज्यों में से

एक रहे।’’ (कुछ पुरानी चिट्ठियाँ)

जिस तरह संसदीय प्रणाली की तीसरी किश्त के रूप में ब्रिटिश पार्लामेंट ने 1935 का इंडिया एक्ट पास किया और उसमें अपने स्थापित स्वार्थों को सुरक्षित रखा था उसी तरह 1947 की फरवरी घोषणा से बदनाम ‘माउंट बेटन समझौते’ का जन्म हुआ, जिसके द्वारा भारत को ब्रिटिश साम्राज्य के परिवार का, राष्ट्रमंडल का एक सदस्य बना दिया गया। इस घोषणा में यह चेतावनी दी गई थी कि भारतीय विधान परिषद् द्वारा जो विधान तैयार किया जायगा ब्रिटेन को वह तभी स्वीकार होगा, जब वह कैबिनेट मिशन योजना में दर्ज प्रस्तावों के अनुसार बनाया जायेगा ।’’

अतएव इस हिदायत पर अमल किया गया और 26 जनवरी, 1950 को विधान परिषद् द्वारा हमें जो विधान दिया गया वह ब्रिटिश पार्लामेंट द्वारा पास किये गए 1935 के इंडिया एक्ट ही का वृहद् रूप है। राष्ट्रपति द्वारा देश को ‘गणतंत्र’ घोषित किय जाने के बाद भी ‘आजाद’ हिन्दुस्तान ब्रिटिश ताज का वफादार है और हम जैसे 1947 से पहले ब्रिटिश इम्पीरियल मैजिस्टी की रैयत थे, वैसे ही अब भी रैयत हैं।

इस विधान द्वारा, जो ‘स्वतंत्र’ गणतंत्र राज्य अस्तित्व में आया है, वह देश में लगी ब्रिटिश या कोई भी विदेशी पूंजी जब्त करने में असमर्थ है। संविधान के बुनियादी अधिकारों में एक धारा है, जो उचित मुआवजा दिये बिना इस जब्ती की मनाही करती है। यह धारा और बहुत–सी धाराओं की तरह 1935 के इंडिया एक्ट से ली गई है।

प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने 17 फरवरी, 1948 को अर्थात् संविधान बनने से दो साल पहले ही घोषणा की थी, “आर्थिक ढांचे में कोई अकस्मात परिवर्तन नहीं होगा। जहाँ तक संभव हो सकेगा वर्तमान उद्योगों का राष्ट्रीयकरण नहीं होगा’’ अप्रैल में रियूटर ने अपने विश्वस्त–सूत्र से समाचार दिया, “भारत सरकार की औद्योगिक तथा आर्थिक नीति ने वर्तमान उद्योगों के बड़े पैमाने के राष्ट्रीयकरण को आईदा दस साल के लिए रद्द कर दिया है।’’ पांच दिन बाद, जो नीति प्रकाशित हुई, उसने इस समाचार का समर्थन किया।

दस साल क्या चालीस साल हो गये, आज तक कोई ऐसा कदम नहीं उठाया गया और न आगे उठाये जाने की संभावना है।

1847 में कम्युनिस्ट लीग की दूसरी बैठक में मार्क्स ने राज्य के बारे में अपना थीसिस पेश करते हुए कहा था, “राज्य न तो वर्ग–समाज को नियंत्रित करता है और न उसकी विशिष्टताओं को निर्धारित करता है बल्कि यह वर्ग–समाज है, जो राज्य को नियंत्रित और उसकी विशिष्टताओं को निर्धारित करता है। इसलिए राजनीतिक विकास के इतिहास की समीक्षा आर्थिक विकास के प्रकाश में होनी चाहिए न कि इसके विपरीत।’’

1947 के इस समझौते से हमारे समाज के वर्ग संबंधों में या आर्थिक ढांचे में कोई बुनियादी परिवर्तन नहीं आया, इसलिए राज्य का स्वरूप भी वही रहा, जो इससे पहले था। ब्रिटिश

साम्राज्यवाद द्वारा संगठित घृणित औपनिवेशिक दमनकारी सरकारी मशीनरी भी ज्यों–की–त्यों बनी रही। इसकी जो विशिष्टताएं हैं, उन पर जवाहरलाल में ‘मेरी कहानी’ के ‘ब्रिटिश शासन का कच्चा चिट्ठा’ परिच्छेद में यों प्रकाश डाला है :

“हिन्दुस्तान में अंग्रेजों ने अपने शासन का आधार पुलिस–राज्य की कल्पना पर रखा है। शासन का काम तो सिर्फ सरकार की रक्षा करना था और बाकी सब काम दूसरों पर थे। उसके सार्वजनिक राजस्व का संबंध फ़ैजी खर्च, पुलिस, शासन–व्यवस्था और कर्ज के ब्याज से था। नागरिकों की आर्थिक जरूरतों पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता था और वे ब्रिटिश हितों पर कुर्बान कर दी जाती थीं।।’’ और “उसकी कर–प्रणाली अत्यंत प्रगति–विरोधी थी, जिसके द्वारा अधिक आमदनी वालों की बनिस्बत कम आमदनी वालों से अनुपात में अधिक कर वसूल किया जाता था और रक्षा और शासन के कामों पर उसका इतना अधिक खर्च था कि यह करीब–करीब सारी आमदनी को चट कर जाता था।’’

यह निरंकुश शासन स्थायी सेनाओं और इंतजामी महकमों पर निर्भर था। सिविल सर्विस, जो इन सेनाओं और महकमों का विशेष अंग थी, उसके बारे में जवाहरलाल ने लिखा है :

“सिविल सर्विस की एक खास शहरत थी ,जिसे खुद उसने फैला रखा था, यानी यह कि वह बहुत कार्य–कुशल है। लेकिन यह बात साफ हो गई कि उस संकरे दायरे के अलावा, जिसके लिए वह भी अभ्यस्त थी, वह बेबस और निकम्मी थी। लोकतंत्री ढंग से काम करने की उसको शिक्षा नहीं मिली थी और उसको जनता का सहयोग और उसकी सद्भावनाएं नहीं मिल सकती थीं और साथ ही उसे जनता से डर भी था और नफरत भी थी। सामाजिक प्रगति की तीव्रगामी बड़ी योजनाओ का उसको कोई अंदाज नहीं था और वह अपनी कल्पनाहीनता और अपने साहबी ढंग से उनमें सिर्फ अड़चन ही डाल सकती थी।।’’ (हिन्दुस्तान की कहानी)

जवाहरलाल ने यह सब उस अनुभव के आधार पर लिखा है, जो 1937 में कांग्रेस मंत्रिमंडल बन जाने से हासिल हुआ था। लेकिन सवाल यह है कि क्या 15 अगस्त, 1947 के बाद शासन–प्रणाली में कोई अंतर आया? क्या अब भी रामराज्य के नाम पर पुलिस–राज्य स्थापित नहीं है? क्या अब भी सिविल सर्विस उसकी धुरी नहीं है? क्या उसे अंग्रेजों के चले जाने मात्र ही से लोकतंत्री ढंग की शिक्षा मिल गई ? क्या इस सविल सर्विस के रहते समाजवाद के निर्माण की बात करना निरा ढोंग नहीं है? क्या सार्वजनिक औद्योगिक क्षेत्र का, पंचवर्षीय योजनाओं का और डैमों ढोंग नहीं है? क्या सार्वजनिक औद्योगिक क्षेत्र का, पंचवर्षीय योजनाओ का और डैमों आदि के निर्माण का सारा इंतजाम इसी सिविल सर्विस के हाथ में नहीं है? उसके आदि के निर्माण का सारा इंतजाम इसी सिविल सर्विस के हाथ में नहीं है? उसके रहते नौकरशाही, भ्रष्टाचार और

Youtube पर @dravid bharat hindi को Subscribe करें और दबायें।

द्रविड़ भारत

4

अगस्त–2026

असफलता की शिकायत क्यों ?

यह थी शासन—प्रणाली और सिविल सर्विस जो कांग्रेस शासकों का ब्रिटिश साम्राज्य से विरासत में मिली। अब खुद कांग्रेसी नेताओं और मंत्रियों के आचरण पर भी एक दृष्टि डाल लीजिए ।

1924 में स्वराज्य पार्टी में चुनाव जीते तो मोतीलाल नेहरू के कड़े अनुशासन और गरजने—घिल्लाने के बावजूद बहुत—से कांग्रेसियों ने पदों के लालच में दल बदलकर ब्रिटिश सरकार से सहयोग किया था।

1937 में कांग्रेस ने प्रांतों में मंत्रिमंडल बनाये तो बड़े जोर—शोर से प्रचार किया गया कि जनता पर प्रशासन का बोझ कम करने के लिए कांग्रेस मंत्री आदर्श उदाहरण बनेंगे और वे सिर्फ पांच सौ रुपये मासिक वेतन में गुजारा करेंगे। इस संबंध में एडवर्ड टामसन ने 2 जनवरी, 1938 को जवाहरलाल के नाम अपने खत में लिखा था :

“मुझे यह पढ़कर बेहद खुशी हुई थी और उत्साह मिला था कि कांग्रेसी मंत्री सिर्फ पांच सौ रुपया मासिक वेतन ले रहे हैं और—यद्यपि जीवन में अनेक भ्रम होते हैं, मुझे सुनकर बड़ा दु:ख पहुँचा कि मंत्रियों का यह त्याग अधिकतर मिथ्या है, क्योंकि बाकी का वेतन वे ‘भत्ते’ के रूप में ले लेते हैं। अगर यह सच है तो कांग्रेस को इससे इतना बड़ा नुकसान पहुँचेगा, जितना कि किसी भी सरकार की कार्यवाही से नहीं पहुँच सकता ।”

इन मंत्रिमंडलों का जो सामूहिक वर्ग—चरित्र था, उसके बारे में पहले लिखा जा चुका है। 25 नवम्बर, 1937 को गाविंद वल्लभ पंत के नाम लिखे जवाहरलाल नेहरू के खत की ये पंक्तियाँ भी देखिए:

“मैं आज आसाम के लिए रवाना हो रहा हूँ और दिसम्बर के मध्य से पहले लौटने की संभावना नहीं है। जाने से पहले आपको लिखना और बताना चाहता हूँ कि जहाँ तक कांग्रेस मंत्रिमंडलों का संबंध है, सारे हिन्दुस्तान में घटनाएं जिस ढंग से हो रही हैं, उससे मुझे बड़ी तकलीफ हुई है। यदि मैं पारिभाषिक भाष में कहूँ तो कांग्रेस मंत्रिमंडलों की वृत्ति क्रांति विरोधी ही रही है। अलबत्ता यह जानबूझकर नहीं किया जा रहा है, लेकिन जब चुनाव करना पड़ता है तो झुकाव इस तरफ को है। इसके अलावा आम रवैया जड़ है । हम जड़ नहीं बन सकते, क्योंकि इसका मतलब यह हो जाता है कि हम केवल पिछली सरकारों की परंपरा को छोटे—छोटे फर्क के साथ निभा रहे हैं। ...”

जवाहरलाल ने अपने और गांधी के बारे में लिखा था :

“मैं हिंसा को कतई पसंद नहीं करता हूँ, लेकिन फिर भी मैं खुद हिंसा से भरा हुआ हूँ और जाने में या अनजाने में अक्सर दूसरों को दबाने की कोशिश करता रहता हूँ और गांधीजी के सूक्ष्म दबाव से अधिक बड़ा दबाव और क्या हो सकता है, जिसके फलस्वरूप उनके कितने अनन्य भक्तों और साथियों के दिमाग कुंठित हो गये हैं और वे स्वतंत्र रूप से सोचने के योग्य नहीं रहे ।”

संसदवाद और गांधीवाद ने देश के ऐसे नेता, ऐसे शासक तैयार किये हैं, जिनका त्याग मिथ्या है, जो हिंसा से भरे हुए हैं, जिनकी करनी और

कथनी में अंतर है, जिनके दिमाग कुंठित हैं और जो सिविल सर्विस की तरह एक बंधी—टिकी लीक से इधर—उधर कदम रचाने की बात सोच ही नहीं सकते ।

जवाहरलाल 15 अगस्त, 1947 से 27 मई, 1964 में अपनी मृत्यु तक देश के प्रधानमंत्री रहे। उनकी तानाशाही की शिकायतें तो बहुत सुनने में आईं, पर उनकी ईमानदारी पर कभी किसी ने शक नहीं किया। वह वाकई बड़े ईमानदार थे ; लेकिन हमें यह नहीं भूलना कि वे किस वर्ग के प्रति ईमानदार थे। अगर गांधीवाद ने अथवा अंधी श्रद्धा के सूक्ष्म दबाव ने दिमाग को कुंठित नही कर दिया है तो सोचिए कि आजादी के नाम पर औपनिवेशिक शासन—प्रणाली को सवीकार करना कहां की ईमानदारी थी ?

भ्रष्टाचार और जन—विरोध के बहुत से सूक्ष्म रूप होते हैं, जो छोटी—छोटी घटनाओं का विश्लेषण कर लेने से सहज में समझे जा सकते हैं। जवाहरलाल कांग्रेस को और गांधी को क्रांतिकारी सिद्ध करने के लिए हमेशा माडरेटों पर बरसा करते थे। एक बार उनकी सरकारपरस्ती की निंदा करते हुए लिखा था :

“श्री शास्त्री (श्रीनिवास शास्त्री) राजदूत बन गये और सर तेजबहादुर सप्रू ने 1923 में लंदन में होने वाली इम्पीरियल कांफ्रेंस में बड़े गर्व के साथ कहा था कि मैं अभिमान के साथ कह सकता हूँ कि वह मेरा ही देश है, जो साम्राज्य को साम्राज्य बनाये हुए हैं।” (मेरी कहानी)

प्रधानमंत्री बनने पर जवाहरलाल नेहरू ने इन्हीं सर तेजबहादुर सप्रू के स्मारक के तौर पर नई दिल्ली में सप्रू हाउस का निर्माण किया। क्यों किया ? अगर इसे उदारता उस व्यक्ति के प्रति थी जिसने देश के शत्रु साम्राज्य की सेवा के लिए जीवन अर्पित किया। क्या इससे यह सिद्ध नहीं हो जाता कि जवाहरलाल नेहरू किस हैसियत में प्रधानमंत्री थे ?

जवाहरलाल का कमाल यह था कि उन्होंने अपनी इस हैसियत को जनता की दृष्टि से छिपाये रखा। वह उसे बड़ी—बड़ी बातों और सुंदर शब्दों में बहलाते—बहकाते रहे और समाजवादी समाज के निर्माण और पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा समृद्धि लाने के सब्ज—बाग दिखाते रहे। धर्मनिरपेक्षता और तटस्थता के नारे तले राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया वाद की सेवा करते और जनांदोलनों को खून में डुबोते रहे और इसके बावजूद देशभक्त और समाजवादी बने रहे।

धोखा देने की अपनी इस कला के कारण ही, जिसे नेहरू केम्ब्रिज से सीखकर आये थे, उन्हें गांधी का लाड़ प्राप्त था और उन सब राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रतिक्रियावादी तत्त्वों का लाड़ प्राप्त था, गांधी अपने सत्य और अहिंसा द्वारा जिनके स्थापित स्वार्थों की रक्षा करता था। यह लाड़ इतना अधिक था कि नेहरू अपने बुढ़ापे में भी जवान महसूस करते रहे और इस लाड़ के पीछे, जो राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगठित प्रचार था, उसने उन्हें समूचे राष्ट्र के लिए उसी तरह ‘चाचा नेहरू’ बना दिया, जिस तरह गांधी को ‘राष्ट्रपिता’ बनाया था।

कुछ लोगों को यह शिकायत रही कि इस

अधिक लाड़ ने नेहरू को बिगाड़ दिया है, उन्हें स्वभाव ही से थिढ़थिढ़ा बना दिया है और उनमें तानाशाह बनने की प्रवृत्ति पैदा कर दी है। यह शिकायत दुरुस्त है, पर इसमें लाड़ के अलावा नीत्से के दर्शन का भी दखल था। गांधी की मृत्यु के बाद उनके उत्तराधिकारी की हैसियत से अतिमानव का पद विरासत में मिला। प्रधानमंत्री के पद के साथ—साथ वह अब अतिमानव के पद पर भी आसीन हुए और मरते दम तक आसीन रहे। अपनी इस दोहरी हैसियत में वह कांग्रेस के सर्वे—सर्वा थे, अति शक्तिशाली तानाशाह थे। जिसने जरा आंख दिखाई, उसे सुभाष की तरह की तरह धूल में मिला दिया। आखिर में हालत यह थी कि उनकी टक्कर का कोई आदमी ही दिखाई नहीं देता था, उनके ‘महान’ कद के सामने बाकी सब नेता टिगने और बालिशिए दिखाई पड़ने लगे। स्वभावत: सवाल पैदा हुआ “जवाहरलाल के बाद कौन?”

सोवियत रूस में खुश्चेव गुट के सत्ता हथिया लेने के बाद अंतर्राष्ट्रीय साम्राज्यवाद के साथ—साथ जवाहरलाल को अंतर्राष्ट्रीय संशोधनवाद का भी लाड़—प्यार प्राप्त हो गया। इससे कद और बढ़ा और नेहरू में अहं की प्रवृत्ति और बलिष्ठ हुई।

आखिर यह ‘अहं’ हिमालय से जा टकराया और चूर—चूर हो गया।

चीन के साथ युद्ध में उन्हें जो आघात पहुंचा वह जानलेवा साबित हुआ। जिस राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगठित प्रचार ने जवाहरलाल नेहरू को ‘चाचा नेहरू’ बनाया, उसी संगठित प्रचार ने जनता में यह भ्रांति फैलाई कि कम्युनिस्ट चीन ने मित्र—द्रोह किया और “हिन्दू—चीनी—भाई—भाई” का नारा बुलंद करने वाले जवाहरलाल नेहरू की पीठ में छुरा घोंपा। पर कहीकत यह है कि जवाहरलाल नेहरू ने प्रधानमंत्री की अपनी जिस हैसियत को जनता पर अंत समय तक जाहिर नहीं होने दिया, चीन के साथ युद्ध उनकी इसी हैसियत से पैदा हुआ।

याद होगा 1936 में जवाहरलाल नेहरू को कांग्रेस का अध्यक्ष बनाकर यह काम सौंपा गया था कि वह राजेंद्र प्रसाद, वल्लभभाई पटेल, राजगोपालचारी आदि प्रतिक्रियावाद के प्रतिनिधि गांधीवादियों की समाजवादियों के हमलों से रक्षा करें। उसी तरह उन्हें प्रधानमंत्री की हैसियत से यह काम सौंपा गया कि वह राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रतिक्रियावाद की, जिसके नेता अमरीकी साम्राज्यवाद और रूसी संशोधनवाद हैं, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी शक्तियों से जिनका नेता इस समय कम्युनिस्ट चीन है, रक्षा करें। यह काम जवाहरलाल और उनकी सहायक शक्तियों के बूते से बाहर था। अतएव चीन के साथ युद्ध में, जो पराजय हुई, उससे जवाहरलाल नेहरू को व्यक्तिगत रूप से जो आघात पहुंचा, वह बाद में पक्षाघात बन गया और इसी से 27 मई, 1964 को इस दोहरे चरित्र की लम्बी कहानी का दुखद अंत हुआ।

साभार : नेहरू बेनकाब

लेखक :हंसराज रहबर

Youtube पर @dravid bharat hindi को Subscribe करें और दबायें ।

द्रविड़ भारत

5

अगस्त-2026

महाराष्ट्र के नवजागरण में सन्त गाडगे का योगदान

सन्त गाडगे का जनम शेणें गाँव (अमरावती) में 23 फरवरी सन् 1876 को हुआ था और मृत्यु बलगौव (अमरावती) के निकट 20, दिसम्बर 1956 को सन् 1905 में 29 वर्ष की उम्र में एक भरा पूरा परिवार छोड़कर जो निकले तो फिर लौटकर नहीं आये। अपने 50 वर्ष के सार्वजनिक जीवन में भीख माँग—माँग कर तथा फावड़ा और खाँची लिए मजदूरों के साथ खट—खट कर जन कल्याण के लिए कार्य किये।

नवम्बर 8 सन् 1956 को बान्द्रा (बम्बई) में किये गये अपने अन्तिम कीर्तिन में सन्त गाडगे ने कहा था कि 'लोग कहते हैं कि सपने में उन्हें भगवान दिखे थे। शंख चक्र गदा, सभी साज समाज के साथ जो वस्तु मन में बैठी रहती है, सपने में वही दीखती है। मेरे बाप को अपने कभी (सपने में) देखा है? नहीं तो जो देखा नहीं, वह दिखती नहीं।'।

उनके उपरोक्त कीर्तन में एक श्रोता ने सन्त गाडगे को बताया कि भगवान की कृपा से नारायण नामक व्यक्ति ने गाँव में मकान बनवाया है तभी दो व्यक्ति बोल उठे कि भगवान ने उसे बच्चे भी दिये। इस पर सत गाडगे बोले, "भगवान घर नहीं देता घर मनुष्य ने बान्धा। घर मनुष्य बनाता है पर ये अनाड़ी भगवान को घर बनाने का श्रेय देते हैं"

सन्त गाडगे मानवीयता और करुणा के जीते जागते प्रतीक थे। वे कहा करते थे "भगवान न तो तीर्थ में हैं न मूर्ति में। यह तो दरिद्रनारायण के रूप में स्वयं तुम्हारे सामने खड़ा है। उसकी प्रेम से सेवा करो। यही आज का सच्चा धर्म है। यही सच्ची भक्ति और भगवान की पूजा है।

सन्त गाडगे महाराष्ट्र के वारकरी सम्प्रदाय के अन्तिम मणि थे। प.ह. पाटिल के अनुसार सन्त तुकाराम के बाद महाराष्ट्र लोक प्रियता सन्त गाडगे को

मिली। यशवन्त राव चव्हाण ने उनकी गणना भारत के महान सन्तों और मनीषियों में की है। नागपुर विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति डॉ. वि.भी कोलते ने यदि उन्हें एक अलौकिक विभूति निरूपित किया है तो आचार्य केचे ने उनके स्वयं में एक सेना तथा विद्यापीठ बताया हैं। सन्त गाडगे की अंग्रेजी जीवनी के लेखक शेरवाड़कर ने उन्हें एक चमत्कार की संज्ञा दी है। पत्रकार के.सी. ठाकरे का कहना है कि महाराष्ट्र की जनता के मन में सन्त गाडगे के लिए जो आदर है वह समुद्र की तरह अथाह और अमिट है। पत्रकार, साहित्यकार और फिल्म निर्माता डॉ. पी.के. अत्रे ने लिखा हे कि गिरे हुए और अनाथों के लिए सन्त गाडगे भगवान के साक्षात अवतार थे। मराठी के चोटी के उपन्यासकार गो.नि. दांडेकर ने उनका सटीक मूल्यांकन करते हुए लिखा है, हाथ में जलती मशाल लिए बाबा जीवनभर दौड़ते रहे। कभी उसे बुझने नहीं दिया न ही उस पर कभी कालिख जमने दिया।'।

बुद्धिवाद, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानसिक स्वतंत्रता और मानवीयता से प्रेरित नवजागरण 14वीं सदी के मध्य में इटली में आरम्भ हुआ। इससे जर्मनी में धार्मिक सुधार आन्दोलन का फ्रांस में सन् 1789 की क्रान्ति का और इंग्लैंड में औद्योगिक क्रान्ति का मार्ग प्रशस्त हुआ।

भारत में नवजागरण 19वीं शताब्दी के आरम्भिक दशक में प्रारंभ हुआ और बंगाल के धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन को प्रभावित किया। पश्चिमी भारत में यह लहर 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में आयी जिससे वहाँ का सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक जीवन आन्दोलित हुआ। उत्तरी तथा दक्षिणी भारत में नवजागरण ने आध्यात्मिक और धार्मिक धारण किया।

महाराष्ट्र में नवजागरण के सभी

नेताओं का उद्देश्य एक ही था। ऐसे समाज की स्थापना जिसमें सभी वर्गों के लोग सुख से और सम्मानपूर्वक जीवन जी सकें। पर मंजिल और मार्ग अलग—अलग थे। यदि उनमें से कुछ ने पारिवारिक मान्यताओं और विसंगतियों के उन्मूलन को ही प्राथमिकता दी तो कुछ समाज के समूचे ढांचे में आमूल परिवर्तन के पक्षपाती थे। कुछ नेताओं ने सामाजिक सुधार को सर्वोपरि माना तो कुछ की मान्यता थी कि विदेशी शासन से छुटकारा पायें बिना सामाजिक समस्याओं का समाधान संभव नहीं।

छुटकारा पायें बिना सामाजिक समस्याओं का समाधान संभव नहीं।

न्यायमूर्ति रानडे, जिन्हें कुछ लोग महाराष्ट्र में सामाजिक चेतना का जनक मानते हैं, सर्वांगीण सुधार के लिए प्रयत्नशील थे। फिर भी उनका मत था कि सामाजिक समस्याएं हमारी अपनी देन हैं। अतः इनके निराश के लिए हमें स्वतंत्रता प्राप्ति तक रुके रहना अनिष्ट नहीं है अतः वे और उनके सहयोगी जिनमें डॉ. आर.जी. भांडरकर, विष्णु शास्त्री पंडित, गोपाल हरि देशमुख (लोक हितवादी) प्रमुख हैं, वे बाल विवाह, विधवाओं का मुंडन, दिखावट के लिए फिजूल खर्ची को रोकने के लिए प्रयास करते रहे। महाराजाओं में सयाजी राव गायकवाड़ और साहू जी छत्रपति तथा सामान्य जनों में गोपाल राव जोशी, बी. एम. मालावारी, एच.एन. आपटे, कर्मवीरी भऊराव पाटिल, पंडित रामावाई, महर्षि कर्वे इत्यादि इसी श्रेणी में आते हैं। पर अपने समय के तेजस्वी जन नायक लोकामन्य तिलक, ओजस्वी लेखक विष्णु शास्त्री चिपलूणकर और वीर सावरकर का मत था कि सभी विपदाओं की जड़ ब्रिटिश सरकार है, जिससे यथाशीघ्र मुक्ति प्राप्त करनी चाहिए। इनमे अलग ऐसे नेताओं

का एक दल था जिनका विश्वास था कि समाज ढांचे में बिना मूल चूल परिवर्तन के मानवीयता का विकास संभव नहीं। महत्मा ज्योतिबा फुले तथा डॉ. बी.आर. अम्बेडकर इस धारा के प्रतिनिधि नेता हैं। सन्त गाडगे, तर्कतीर्थ लक्ष्मण शास्त्री जोशी, साने गुरुजी और डॉ. पी.के. अत्रे इनके नजदीक आते हैं।

सन्त गाडगे पढ़े—लिखे नहीं थे। अतः अपने लक्ष्य प्राप्ति—अन्धविश्वास, चमत्कारों में विश्वास और वर माँगने की प्रवृत्ति अशिक्षा और तरह—तरह की सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन के लिए उन्होंने लोकप्रिय कीर्तन का मार्ग अपनाया अपनी पकी आवाज और श्लोकों तथा पदों के अथाह—भंडार के कारण शीघ्र ही वे एक सफल कीर्तनकार बन गये।

सन्त गाडगे अन्धविश्वास पर तीव्र प्रहार करते नहीं थकते थे। वे कहते थे कि सन्तान प्राप्ति ओर बीमारी ठीक होने के लिए लोग मन्मत मानते, मंदिरों ओर देवघरों का चक्कर लगाते और झाड़—फूंक कराते फिरते हैं लेकिन सन्तान को पाने के लिए वर—वधु की जोड़ी अच्छी होनी चाहिए और बीमारी से छुटकारे के लिए इलाज करना चाहिए। वे लोगों से पूछते कि क्या देवघर लगाने वाले के घर के लोग नहीं मरते? जब वे अपने ही लोगों को नहीं बचा पाते तो तुम्हारा रोग कैसे ठीक कर पाएंगे ? वह तीर्थ यात्रा का भी खंडन करते थे और मूर्ति पूजा की आलोचना करते हुए वे कहते कि जो मूर्ति स्वयं स्नान नहीं कर पाती, कपड़ा नहीं पहन सकती, भोजन नहीं कर पाती, प्रसाद जूठा कर रहे कुत्ते को भगा नहीं पाती और अन्धेरे में जिसका दर्शन कराने के लिए दीपक की जरूरत पड़ती है, उसे भगवान कैसे मान ले? फिर वे पूछते थे कि क्या ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध किये गये सत्याग्रहों में किसी मंदिर का देवता भाग लेने आया ?

चमत्कार मानने की प्रवृत्ति अपरिपक्व और अविकसित मस्तिष्क का

दूसरा लक्षण है। भगवान बुद्ध ने कहा था कि प्रत्येक घटना के पीछे कुछ न कुछ कारण होता है, जिसके मालूम न होने पर लोग चमत्कार गढ़ लेते हैं। सन्त गाडगे ने जीवन भर इस प्रवृत्ति का घोर विरोध किया, पर चमत्कार में विश्वास रखने वालों ने उन्हें भी नहीं छोड़ा। उनके जीवन काल में ही कुछ लोग मानने लगे थे कि कीर्तन के बाद वे हवा में विलीन हो जाते हैं, हवा में तैरते हुए सैकड़ों मील चले जाते हैं। और एक ही समय वे कई स्थानों पर देखे जाते हैं। सन्त गाडगे बराबर कहा करते थे कि ये कोरी कल्पना है। कीर्तन के बाद वे किसी अन्धेरी जगह में छिप जाते थे ताकि पांव छूने के लिए लोग तंग न करें। अनपढ़ होने के कारण लोगों तक पहुँचने के लिए भाग—दौड़ उनके लिए नितान्त जरूरी था। वसन्त शेरवाड़कर ने सन्त गाडगे की जीवनी **दि वांडरिंग सेंट** में यह बताते हुए कि वे जीवन भी चमत्कार का विरोध करते रहे सन्त गाडगे का एक कथन उद्धृत किया है जिसका हिन्दी अनुवाद इस प्रकार है— यदि कोई गुप्त शक्ति से किसी को नष्ट कर दे तो अवश्य ही उसका स्थान भगवान से भी ऊँचा होना चाहिए। क्या ऐसे आधे दर्जन लोगों को युद्ध के मैदान में उतार देना पर्याप्त नहीं होगा जो अपनी इस प्रकार की शक्ति से राइफल, बन्दूक और बम सभी को ही नाकाम कर दें।”

सन्त गाडगे स्वयं निरक्षर होते हुए भी शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। अपनी उपरोक्त कीर्तन में शिक्षा पर जोर देते हुए उन्होंने कहा था — “अभी से बच्चों को पढ़ाओ। कहते हो पैसा नही हे तो खाने की थाली बेच डालों, हाथ पर रोटी खाओं। पत्नी के लिए कम कीमत की साड़ी खरीदो। समधी की खातिरदारी मत करो। पर बच्चों का पाठशाला में डाले बिना न रहो।”

शिक्षा की प्रगति और प्रसार के लिए सन्त गाडगे ने ठोस काम भी किया। अपने जीवन काल में उन्होंने 31 शिक्षण

संस्थाओं की भी स्थापना की थी जिसमें 10 आश्रम, स्कूल 8 आदिवासियों के लिए ओर विमोचित आश्रम, दो संस्कार केन्द्र, एक उच्चतर विद्यालय और एक महाविद्यालय हैं। इनमें अधिकांश दूर—दराज के जंगली इलाकों में हैं। जातियों और घुमन्तु जातियों के लिए एक—एक, 15 छात्रावास 11 लड़को ओर 4 लड़कियों के लिए, एक कन्या पाठशाला, एक महिला आश्रम, दो संस्कार केन्द्र, एक उच्चतर विद्यालय और एक महाविद्यालय हैं। इनमें अधिकांश दूर—दराज के जंगली इलाकों में हैं।

अपने कीर्तनों और प्रवचनों मे सन्त गाडगे बराबर जोर देते थे कि लोग अध्यावसाय करें और फिजूल खर्ची को बन्द करें। वे किसानों से कहते थे कि अच्छी पैदावार लेने के लिए वे कड़ी मेहनत, अच्छी खाद और अच्छे बीज खेती के अच्छे औजार का उपयोग करे। पानी की उचित व्यवस्था करें और खेत से गन्दगी निकाल फेंके। अपने उक्त कीर्तन में उन्होंने कहा था कि बम्बई के एक—एक व्यक्ति के पास सौ—सौ कमरे वाले दस—दस मकान हैं और कुछ ऐसे भी व्यक्ति हैं जिनके पास एक कमरा भी नहीं है। वे लोगों से कहते थे कि कर्ज निकाल कर ठाठ—बाट से दिवाली न मनाएं, कर्ज काढ़ कर धर्म न करें और तीर्थ पर न जाएं। यही नहीं वे यह भी सलाह देने से बाज नहीं आते थे कि यदि घर में कोई व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त हो जाय तो कर्ज लेकर उसकी लाश न सजाएं, उसकी जली हड़्डी को दूर गंगा में प्रवाहित न करे या उसके दसवें पर लोगों को भोजन न खिलाएं उनका विचार था कि मृत व्यक्ति की जली हड़्डी को गंगा में प्रवाहित करने से पुण्य नहीं होगा, ओर न नाली में फैंक देने से पाप।

– कमलेश प्रजापति

बाँदा

शाहू जी महाराज का समतावादी शासन

छत्रपति शाहू जी महाराजा का जन्म 26 जुलाई 1874 में पेशवाशाही के राज्य महाराष्ट्र में हुआ। इसमें आश्चर्य की बात कोई नहीं कि बड़े-बड़े समाज सुधारक व परिवर्तनवादी महापुरुष संत महाराष्ट्र में ही क्यों हुये? नामदेव नारायण गुरु ज्योतिराव फूले महाराजा छत्रपति शाहू जी, बाबा साहिब अम्बेडकर महाराष्ट्र में ही पैदा हुये। स्वाभाविक है कि पेशवाशाही / पुरोहितवाद / कठमुल्लावाद / मनुवाद / ब्राह्मणवाद जहाँ-जहाँ जनता का शोषण चरण सीमा तक करेगा वहाँ-वहाँ ही न्यूटन के तीसरे सिद्धान्त के तहत हर क्रिया के खिलाफ विपरीत और समान प्रतिक्रिया होगी और शायद यह प्रतिक्रिया सामान्य से कहीं अधिक हो जाए। महाराष्ट्र में पेशवाशाही के अत्याचार व दमन चरम सीमा तक पहुँच चुके थे तथा इसी के प्रतिक्रिया स्वरूप परिवर्तन के हामी महापुरुष का प्रादुर्भाव महाराष्ट्र में हुआ।

छत्रपति शाहू जी महाराजा के पूर्वज छत्रपति शिवाजी का पैर के अंगूठे से राज्याभिषेक पेशवाशाही ने 1674 ई0 में किया और सिर्फ छः साल बाद 1680 में उनका निधन हो गया। यदि छत्रपति शिवाजी की प्राकृतिक मृत्यु हुई तो उनके पुत्र शम्भाजी महाराज की आंखे पेशवा शाही ने क्यों निकलाई तथा बाद में उनकी हत्या क्यों करवाई? फिर इसी वंश के बालक शाहू जी के प्राणों की प्यासी पेशवाशाही क्यों रही तथा औरंगजेब की बहिन कुमारी जैबुनिशा को हिन्दू रीति से अलग महल बनाकर शाहू जी नामक बालक की परिवरिश क्यों करनी पड़ी? क्या शिवाजी को शिव मानकर उनका ढोल पीटने वाले भूषण कवि व शिव सैनिक इसका उत्तर देंगे? शिवजी पूज्यनीय है शाहू जी महाराजा पूज्यनीय क्यों नहीं।

बिना ताकत के राज्याभिषेक नहीं होता

छत्रपति शिवाजी को बहुत

रिश्वत लेकर राज्याभिषेक द्वारा क्षत्रिय माना गया। परन्तु शाहू जी महाराजा का राज्याभिषेक सीधे हाथ से बिना रिश्वत के आसानी से किया गया। क्यों? क्योंकि शाहू जी महाराजा प्रमाद से निकलकर प्रजा के प्रकाश में आ चुके थे उन्हें बुद्धत्व प्राप्त हो चुका था। प्रमाद का अर्थ है अन्धविश्वास की जगह बुद्धि का प्रयोग।

क्षत्रिय होकर क्षत्रिय क्यों नहीं?

जब तक मालिक आदर सत्कार होता रहा तब तक शाहू जी महाराजा क्षत्रिय रहे। जब तक दलितों पिछड़ों का भरपूर शोषण होता रहा तब तक शाहू जी महाराजा क्षत्रिय रहे। क्षत्रियपन इन्हीं परिस्थितियों में बरकरार रह सकता। जिस किसी को क्षत्रिय नहीं माना उसके काटों तो खून नहीं, मिट्टी में मिल गया — ऐसी परम्परा रही।

शूद्रों के लिए वैदिक मंत्र नहीं?

कोई गड़बड़ी होगी इन मंत्रों में जिसके कारण 90 प्रतिशत जनता पर इनके सुनने पर रोक लगाई गयी। शाहू जी महाराजा, विजय पर्व पर तरुणाताल में स्नान करते हैं परन्तु राज्यपुरोहित बिना स्नान किये वैदिक मंत्रों का उच्चारण करने लगा। शाहू जी महाराजा ने कहा — महाराज क्या आपकी तबियत तो खराब नहीं कहीं भेजा तो नहीं घूम गया जो बिना नहाये वैदिक मंत्र उच्चारित कर रहे है। पुरोहित ने कहा महाराज वैदिक मंत्र क्षत्रियों के लिये होते हैं तथा तभी स्नान करके बोले जाते हैं। शाहू जी ने पूछा कि मैं पहले क्षत्रिय था अब क्षत्रिय क्यों नहीं हूँ। उत्तर दिया महाराज तब तक हमें आप अपने से भी सर्वोपरि मानते रहे और राज्यतंत्र के अनुसार शासन चलता रहा तब तक आप क्षत्रिय थे। अब तो आप बाल गंगाधर तिलक तक को नहीं मानते। घर बाहर राज्य दरबार में हमेशा आप महार चमार भंग आदि नीच जाति से घिरे रहते हैं आपने उनके दिमाग खराब कर दिये। शाहू जी महाराजा की जगह यदि शिवाजी महाराज होते तो शायद एक दो करोड़ रिश्वत देकर क्षत्रिय बने रहते।

राज्य पुरोहित व शंकराचार्य का निष्कासन

शाहू जी महाराजा ने शहर कोतवाल को आदेश देकर राज्य पुरोहित को गिरफ्तार करवकर जेल में डाल दिया तथा उसके घर की कुर्की करवा ली। राज्य के शंकराचार्य ने जब इसका विरोध किया तो उन्हें भी राज्य से निष्कासित कर दिया। ऐसा करके शाहू जी महाराज ने अपने को ब्लैकमेल होने से बचाया, जनता को बचाया तथा अपने पूर्वजों के अपमान का बदला भी ले लिया।

लक्ष्मी के बदले सरस्वती खरीदी गई

जब नब्बे प्रतिशत जनता सरस्वती विहीन कर दी गई थी और जब शाहू जी महाराजा पर चारों ओर से हमले होने लगे। उनके महल को बाल गंगाधर तिलक ने बम से उड़ा दिया तथा अपने अखबार केसरी के जरिये उनका तीव्र विरोध किया। उनके राज्य के मुकदमों की देश व विदेश में कोई पैरवी करने वाला नहीं था। ऐसे में शाहू जी महाराजा ने सैकड़ों अछूत बालकों को उच्च शिक्षा हेतु छात्रवृत्ति दी। उन्हीं में बाबा साहब डा0 अम्बेडकर भी थे। जब बड़ौदा नरेश के पुरोहितों ने बाबा साहिब की उच्च शिक्षा पर रोक लगवा दी तो छत्रपति शाहू जी महाराजा ने उन्हें सर्वोच्च शिक्षा के लिये लन्दन और जर्मनी भेजा तथा वहां के दुनियां के सर्वोच्च शिक्षित सरस्वती पुत्र बनकर लौटे। शाहू जी महाराजा व सयाजी राव गायक वाड़ फूले नहीं समाये।

इक्यावन तोपों की सलामी

शाहू जी महाराजा 51 तोपों की सलामी वाले महाराजाधिराज थे। गवर्नर को भी उनसे मिलने के लिये पहले से समय लेना पड़ता था। उनको राज्य सात संसदीय क्षेत्रों के बराबर था। लेकिन वही महाराजा बारह घोड़ों की बग्घी की शाही सवारी पर बैठ कर डा0 अम्बेडकर के बहिष्कृत भारत के छापेखाने में बैठकर प्रूफ रीडिंग करते थे यह घटना याद दिलाती है अशोक महान के साम्राज्य की।

Youtube पर @dravid bhara hindi को Subscribe करें और दबायें।

द्रविड़ भारत

8

अगस्त-2026

शाहू जी महाराजा का घर परिवार राज दरबार का सम्पूर्ण जीवन जन कल्याणार्थ था। जो राजशाही/पुरोहित शाही के विरुद्ध में था।

सामूहिक इस्तीफे द्वारा असहयोग

जब राज्यशाही की चूलें हिलने लगी तो प्रधानमंत्री से सन्तरी के पदों पर विराजमान मनुवादी राज्य कर्मचारियों ने महाराजा के राज्य को अपंग बनाने के लिये सामूहिक इस्तीफे दे दिये। सोचा होगा कि महाराजा रिश्त देकर उन्हें मनायेंगे। परन्तु ऐसा नहीं हुआ। सभी इस्तीफे सहर्ष मंजूर कर लिये तथा उनकी जगह बहुजन समाज से भर्तिया कर दी गई। राज्य और अधिक दूनी गति से उन्नति करने लगा। माफी मांगने पर भी नौकरी पर नहीं लिया गया। इसी का परिणाम है कि 1902 में कोल्हापुर राज्य में बहुजनों की सेवाओं में 90 प्रतिशत तक भागीदारी हो गई।

पिछड़ों का आवाहन

शाहू जी महाराजा ने एक

विशाल जन सभा में डा0 अम्बेडकर का हाथ ऊँचा उठाने हुये परिचय कराया था कि मैंने दुनियाँ का सर्वोच्च शिक्षित व्यक्ति आपको दे दिया है। तुम इस पर विश्वास कर सकते हो। ये तुम्हारे दुख दर्द को दूर करेगा। ये तुम्हारे अधिकारों की बहाली करेगा।

गुरुओं के भी गुरु

गुरुओं के गुरु ज्योतिराव फूले के प्रकाश से सभी महापुरुष रोशन हुये। बहुजन समाज के सभी महाराजाओं ने फूले से प्रेरणा ली। डा0 बाबा साहिब अम्बेडकर ने अपने गुरु फूले की समाधि पर फूलों की वर्षा की। डा0 अम्बेडकर ने शाहू जी महाराजा की भी समाधि पर फूलों की वर्षा की और अन्ततः इन सबकी समाधियों पर बहुजन मिशन के मसीहा ने फूलों की वर्षा की।

प्रेरणा श्रोत

छत्रपति शाहू जी महाराजा राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्रियों, राज्यपालों, शासकों व प्रशासकों के लिये

प्रेरणा पुंज हैं। शाहू जी महाराजा के राज्य का विस्तृत अध्ययन होना चाहिए। अब शाहू जी महाराजा व डा0 अम्बेडकर का युग आया। या शायद अभी नहीं आया। पंगों की ध्वनि सुनाई पड़ रही है। इक्कीसवीं सदी शाहू जी महाराजा व डा0 अम्बेडकर के नाम लिखी जा चुकी है।

प्रेरणा श्रोत

छत्रपति शाहू जी महाराजा राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्रियों, राज्यपालों, शासकों व प्रशासकों के लिये प्रेरणा पुंज हैं। शाहू जी महाराजा के राज्य का विस्तृत अध्ययन होना चाहिए। अब शाहू जी महाराजा व डा. अम्बेडकर का युग आया। या शायद अभी नहीं आया। पंगो की ध्वनि सुनाई पड़ रही है। इक्कीसवीं सदी शाहू जी महाराजा व डा. अम्बेडकर के नाम लिखी जा चुकी है।

- गम्भीर देव

ग्राम अटधार, पो. इचौली, जिला महोबा

सूचना

पीएमएफएमई-प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्योग उन्नयन योजनान्तर्गत हमीरपुर में “जनपदीय रिसोर्स पर्सन” के चयन हेतु सूचना

रिसोर्स पर्सन हेतु योग्यतायें कोई भी उपयुक्त व्यक्ति (जैसे रिटायर्ड बैंक/सरकारी अधिकारी, बीमा एजेंट बैंक मित्र, कन्सल्टेन्सी फर्म, व्यक्तिगत प्रोफेशनल्स आदि)

कार्य विवरण रिसोर्स पर्सन, एकल उद्योगों एवं समूहों को डी0पी0आर0 तैयार करने, बैंक से ऋण लेने FFSAI के मानकों, उद्योग आधार, जी0एस0टी0 आदि सहित आवश्यक पंजीकरण एवं लाइसेन्स प्राप्त करने में सहायता जैसी हैंड- होल्लिंग सेवायें प्रदान करेंगे।

रिसोर्स पर्सन हेतु भुगतान प्रत्येक लाभार्थी को उपलब्ध कराई गई सहायता के आधार पर रिसोर्स पर्सन का भुगतान, बैंक से ऋण की स्वीकृत के उपरान्त किया जायेगा। प्रत्येक रिसोर्स पर्सन की प्रति बैंक ऋण की स्वीकृति/फर्मलाईजेशन के उपरान्त रू0 20000/- की दर से भुगतान किया जायेगा।

इच्छुक व्यक्ति अपना आवेदन स्पीड पोस्ट/पंजीकरण डाक/व्यक्तिगत रूप से कार्यालय जिला उद्यान अधिकारी, हमीरपुर, सार्वजनिक उद्यान परिसर कम्पनीबाग हमीरपुर में दिनांक **17.08.2026** समय 5:00 बजे तक आमंत्रित किये जाते हैं। निर्धारित तिथि एवं समय के उपरान्त प्राप्त आवेदन पत्र स्वीकार नहीं किये जायेंगे।

योजना विवरण:- प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्योग योजनान्तर्गत जनपद में सूक्ष्म खाद्य उद्योग(मिनी फ्लोर मिल, आयल मिल, ब्रेड, नमकीन, टोस्ट, अचार-मुरब्बा, सास- केचअप, मुर्गी /मछली दाना, पशु आहार आदि लगाने पर क्रेडिट लिंकड सब्सिडी के रूप में 35 प्रतिशत/अधिकतम् 10 लाख रूपये तक का अनुदान दिया जाता है। इच्छुक व्यक्ति कार्यालय में किसी भी कार्यदिवस में सम्पर्क कर सकते हैं या <https://pmfme.mofpi.gov.in> पर आवेदन व अन्य जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

डॉ. बलदेव प्रसाद

जिला उद्यान अधिकारी, हमीरपुर

मो.: 7753920906

Youtube पर @dravid bhara hindi को Subcribe करें और दबायें ।

द्रविड़ भारत

अगस्त-2026

प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति का सिद्धान्त एवं मधुमेह रोग व निवारण

– सियाराम

प्राकृतिक चिकित्सक

एम.ए. (समाजशास्त्र), डी.ई.एच.एम., एन.डी.डी.वाई

प्रा. पो. रिवाई सुचैना जि. महोबा

प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति प्राकृतिक नियमों के आधार पर जैसा प्रकृति से प्राप्त हुआ वैसा ही सेवन करना। तथागत गौतम बुद्ध के समय से प्राकृतिक चिकित्सा के प्रयोग के इतिहास मिलते हैं।

महाबग्ग नामक बौद्ध ग्रन्थ में एक जगह लिखा है कि एक बार तथागत गौतम बुद्ध श्रावस्ती नगरी से राजगृह जाते समय कलंद निवाय नामक संघ में ठहरे हुए थे। वहाँ एक दिन बौद्ध भिक्षु को सांप ने काट खाया लोगों ने उनकी सूचना तथागत बुद्ध को दी तथागत बुद्ध ने कहा 'हे भिक्षुओं ! मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि विष नाश के लिए चिकनी मिट्टी, गोबर, मूत्र और राख का उपयोग करें। भिक्षुओं के प्रश्न करने पर कि उपर्युक्त वस्तुओं में से एक या सबका एक साथ उपयोग होना चाहिए तथागत ने कहा— मिले उसका अतः इस ढाई हजार वर्ष पुरानी घटना से इस बात का पता चलता है कि रोग नाश के लिए मिट्टी का प्रयोग भारत वर्ष में अति प्राचीन काल से प्रचलित है। एक समय तथागत बुद्ध ने पिलीदवक्क नामक भिक्षु के बीमार पड़ने पर भाप स्नान जल स्नान के तथा ऊष्ण जल स्नान के भी प्रयोग की आज्ञा दी थी।

प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के दस आधारभूत सिद्धान्त—

1. सभी रोग एक उनके कारण एक उनकी चिकित्सा भी एक प्राकृतिक चिकित्सा विज्ञान भी एक दर्शन है। इसके सिद्धान्तानुसार समस्त रोग वस्तुतः एक ही है। उनका कारण एक ही है, तथा उनकी चिकित्सा भी एक ही है। प्राकृतिक चिकित्सा विज्ञान का यह एक अटल सिद्धान्त है कि मानव शरीर में स्थित एक ही विजातीय द्रव्य अनेक रोगों के रूप में तथा विभिन्न नामों से प्रकट और विख्यात होता है।

भारतीय संस्कृति के सिद्धान्तानुसार मानव शरीर एक और अभिन्न होता है समूचा मनुष्य एक और अभिन्न है। सारा

विश्व अभिन्न और एक है।

एक घर में पाँच प्राणी रहते हैं। पाँचों आप्राकृतिक जीवन व्यतीत करते हैं। उत्तेजक एवं मादक द्रव्यों का सेवन करते हैं। प्राकृतिक उपादानों का उचित रूप में सेवन नहीं करते हैं। फलस्वरूप उनके शरीर का रक्त विषाक्त हो उठाता है। उनका शरीर विजातीय द्रव्य से भर जाता है।

परिस्थिति, आयु, प्रकृति आदि के अनुसार उन पाँचों प्राणियों में से प्रत्येक एक ही रोग से आक्रांत नहीं हो सकते। हलांकी पाँचों के रोगों का कारण एक ही है उनके शरीर में आप्राकृतिक जीवन यापन जनित विजातीय द्रव्य की उपस्थिति उनमें से किसी को दस्त आना शुरू हो सकता है।, किसी को ज्वर आ जाय तो किसी को गठिया रोग किसी को शरीर में पित्ती उछलना और किसी को बवासीर हो सकता है। ये सभी रोग एक दूसरे से भिन्न हैं। पर वस्तुतः वे एक ही हैं अर्थात् शरीर में उपस्थिति विजातीय द्रव्य का बहिष्करण भिन्न तरीकों से होना।

अब मल बहिष्करण में रोगी और उसके चिकित्सक का क्या कर्तव्य होना चाहिए ? केवल प्रकृति के उस कल्याणकारी कार्य में सहूलियत पैदा करना उसे मदद देना अर्थात् उपवास का युक्ताहार से जीवन शक्तियों को बढ़ाना तथा जलोपचार, मिट्टी सैंक, मर्दन, एनीमा आदि से शरीर के मल मार्गों को पूर्णतयः खोलकर उनको क्रियाशील कर देना ताकि वे शरीर के मल का बहिष्करण करने में सफल हो। बस इस तरह देखेंगे कि संसार के सभी रोग वास्तव में एक ही हैं तथा उनके कारण, निदान एवं चिकित्सा भी एक ही हैं। क्योंकि उन रोगों के होने का कारण केवल एक ही होता है— शरीर

में मल का एकत्र हो जाना।

2. रोग के कारण कीटाणु नहीं— यह एक प्राकृतिक नियम है कि सृष्टि में जितने पदार्थ हैं, उनके सूक्ष्म परमाणु अनवरत रूप से गतिशील रहते हैं। जिन वस्तुओं के परमाणु एक सी गति रखते हैं, उनमें परस्पर आकर्षण होता है। और विशुद्ध गति वाले परमाणु एक दूसरे से दूर भागते हैं। अतः इस सिद्धान्तानुसार रोग के कीटाणुओं का अस्तित्व उन्हीं शरीरों में सम्भव है। जिनमें पहले से ही रोग का कारण विजातीय द्रव्य विद्यमान होता है या जो रोगस्त या जिनमें रोग के ग्रहण करने की योग्यता है। लेकिन जिन शरीरों के भीतर कीटाणुओं के विपरीत पोषण तत्व विद्यमान होंगे अर्थात् जो विजातीय द्रव्य से सर्वथ्य मुक्त हों। और सही मायनों में जो स्वस्थ होंगे उन पर उपर्युक्त प्राकृतिक नियम के अनुसार कीटाणुओं को आक्रमण होना असम्भव है। और यदि यह कार्य सम्भव भी मान लिया जायतो ऐसे शरीरों में निषेधक शक्ति पहले से ही विद्यमान होने के कारण रोगाणुओं का विषकृत प्रभाव ही नष्ट हो जायेगा। और वे स्वयं नाश को प्राप्त हो जावेंगे। निर्मल शरीर में संसार के सारे रोगाणु एक साथ मिलकर भी रोग उत्पन्न नहीं कर सकते। परन्तु जिस शरीर में कीटाणुओं के पोषण योग्य मल विद्यमान है उसमें रोगाणु अवश्य उत्पन्न होंगे, पनपेंगे तथा वृद्धि को प्राप्त होंगे। इस तरह हम देखते हैं कि कीटाणु रोग के कारण नहीं होते बल्कि रोग ही कीटाणु के कारण है।

3. तीव्र रोग शत्रु नहीं, मित्र होते हैं— एक प्रसिद्ध प्राकृतिक चिकित्सक का कथन है— तुम मुझे ज्वर दो, मैं तुम्हें स्वास्थ्य देता हूँ। अर्थात् मल पूरित शरीर

को मल रहित करने के लिए ज्वरादि तीव्र, रोग ही एक मात्र सच्चा उपाय है। शरीर में सदैव विजातीय द्रव्य (मल) उत्पन्न होता रहता है। जिससे हमारे शरीर के मल मार्ग (रोम कूप,गुर्दे, गुदा आदि) प्रतिदिन निकालते रहते हैं। यदि किसी कारण से उस मल को बाहर निकल जाने का रास्ता न मिले तो वह शरीर में बीमारी उत्पन्न करके बाहर निकल जाने की स्वभाव से कोशिश करता है। इसी स्थिति को रोग होना कहते हैं। इस तथ्य को समझ लेने के बाद यह स्पष्ट हो जाता है। कि आवश्यकता पड़ने पर मनुष्य को रोग होना कितना आवश्यक है। अथवा दूसरों शब्दों में, रोग हमारे शत्रु नहीं मित्र होते हैं। जो हमें स्वास्थ्य देने आते हैं, लेने नहीं। दृष्टान्त स्वरूप मान लीजिए कि प्रकृति को पेट जनित मल को धोना है, तो इस कार्य को वह उल्टी या दस्त की बीमारी पैदा करके कर सकती है। साथ में पानी की प्रबल प्यास भी उत्पन्न हो सकती है। और यदि मस्तिष्क के विकार को साफ करना है। तो जुकाम होगा, प्यास लगेगी और नाक में रास्ते परनाले बहेगे आदि।

4. प्रकृति स्वयं चिकित्सक है — यहाँ पर हम उदाहरण देकर समझा रहे हैं कि जब पानी पीते हैं तो पानी पीते वक्त पानी हवा की नली में चला जाता है तो खांसी पैदा करके कौन उसे ठीक करता है ? जब तम्बाकू आदि कोई जहरीली चीज पेट में चली जाती है तो कै या उल्टी के जरिये उसे कौन निकालता हैं। हड्डी के टूट जाने पर उसे कौन जोड़ता है ? प्रकृति ही तो है। अर्थात् रोगी के रोग का निवारण उसका शरीर स्वयं करता है रोग मुक्ति की सम्भावना चाहे कितनी भी कम क्यों न हो प्रकृति उसकी मदद के लिए कोई कमी नहीं रखती और रोगी के आखिरी दम तक प्रयत्नशील रहती है।

5. चिकित्सा रोगी के पूरे शरीर की होती है रोग की नहीं— प्राकृतिक चिकित्सा प्रणाली से प्रत्येक रोग अच्छा किया जा सकता है। पर प्रत्येक रोगी नहीं। प्रत्येक रोगी इसलिए नहीं क्योंकि रोगी का अच्छा होना या न होना निम्नलिखित पाँच बातों पर निर्भर करता है।

1. रोगी के शरीर में विजातीय द्रव्य (मल) की मात्रा कितनी है ?
2. रोग निवारण के लिए यथेष्ट जीवन—शक्ति उसमें है या नहीं।
3. रोगी किस हद तक चिकित्सा कर चुका है या कर रहा है वह धैर्य को खो तो नहीं रहा है?
4. प्राकृतिक चिकित्सा आरम्भ करने से पहले रोगी को घातक औषधियाँ तो नहीं दी गयी थी या कोई बड़ा आपरेशन तो नहीं हुआ था।
5. रोगी प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति में विश्वास करता है या नहीं ?
- 6. रोग निदान की विशेष आवश्यकता नहीं**— रोगी के शरीर में विजातीय द्रव्य का एकत्र होना ही रोग है। निदान के लिए एक प्राकृतिक चिकित्सक को केवल यह देखना होता है। कि वह दुर्द्रव्य (बादीपन) शरीर के किस भाग में स्थित है सामने, बगल में या पीछे अथवा समस्त शरीर में व्याप्त है। जिसके उदाहरण मोटे आदमी होते हैं। यदि बादी पन समान्य हुआ तो उसे प्राकृतोपचार से शीघ्र दूर किया जा सकता है, यदि बगल वाला हुआ तो सामने वाले बादीपन की अपेक्षा उसे जरा कठिनाई से दूर किया जा सकता है और यदि पीछे का या समस्त देह का बादीपन हुआ तो समस्या जटिल समझी जाती है। इसके अतिरिक्त रोगी के मुख और गर्दन की रूपान्तर दशा और त्वचा के अनेक तरह के बुरे रंगों को देखकर तथा उसकी अस्वस्थता की कहानी उसके मुख से सुनकर भी निदान कर लिया जाता है। सिद्धान्त हर हालात में यही रहता है कि यह पता लगाया जाये कि रोगी के शरीर के किस भाग में किस अंग विशेष पर विजातीय द्रव्य का भार अधिक है जिसे सूक्ष्म दृष्टि से देखने से न केवल एक प्राकृतिक चिकित्सक अपितु कोई भी देख सकता है और देखकर उचित उपचार सोच सकता है। इस तरह हम देखते हैं कि प्राकृतिक चिकित्सा की निदान विधि, जिसमें भटकने और बहकने का भय ही नहीं।
- 7. जीर्ण रोग के रोगियों के अरोग्य लाभ में समय लग सकता है**—डाक्टर लिण्डल्हार से प्राकृतिक चिकित्सा

प्राणाली पर आक्षेप करते हुए उसके किसी विरोधी ने कहा—प्राकृतिक चिकित्सा से तो रोगी बहुत देर में अच्छे होते हैं यहाँ तक कि तबियत उकता जाती है। डाक्टर साहब ने छूटते ही कहा बिलकुल नहीं, प्राकृतिक चिकित्सा से तो रोगी बहुत जल्दी अच्छे हो जाते हैं इतना ही नहीं संसार में जितनी चिकित्सा पद्धतियाँ आजकल प्रचलित हैं प्राकृतिक चिकित्सा उन सब से रफ्तार वाली चिकित्सा है अगर हमारी परेशानी तो यह है कि हमको सिर्फ आसाध्य रोग के रोगी ही जो सब जगह से निराश हो चुके होते हैं, उपचार के लिए मिलते हैं। उनको ठीक करने में समय तो लगता ही है। क्योंकि उनके शरीर में विजातीय पदार्थ अधिक मात्रा में होते हैं और औषधियों के विष भी जिनको शरीर से निकालना पड़ता है।

प्रकृति का समस्त कार्य तेजी से नहीं धीरे—धीरे होता है। जो शक्ति धीरे—धीरे संचित होती है वह युक्त होकर पहाड़ तक को विदीर्ण कर सकती है। पर क्या कोई शक्ति पलक मारते बीज को वृक्ष में परिणित कर सकती है ? जल्दी का काम शैतान का प्रसिद्ध ही है। पेड़ काटना मिनटों का काम है पर पेड़ उगाना वर्षों का प्रकृति के नियमावली में संहार जल्दी सम्भव हैं पर विकास जल्दी असम्भव।

8. प्राकृतिक चिकित्सा से दबे रोग उभड़ते हैं— ‘उभाड़’ को चिकित्सा की भाषा में रोग का तीव्र रूप रोग की अपकर्षावस्था पुराने रोग का प्रत्यावर्तन” अरोग्यप्रद दारुण स्थिति रोग उपशमन संकट Healing तथा crisis curative crisis आदि नामों से पुकारते हैं। इसका सीधा—सादा मतलब है जीर्ण रोग के उपचार काल में किसी समुचित समय पर उस रोग की तीव्र प्रतिक्रिया का होना या दबे रोग का प्राकृतोपचार द्वारा अर्जित प्रबल जीवनी शक्ति के प्रभाव, जड़ से उखड़ कर सदा के लिए चले जाने के लिए प्रस्तुत हो जाना, और थोड़े समय तक अपना जलवा दिखाकर रोगी का पिण्ड हमेशा के लिए छोड़ देना।

9. मन तथा शरीर की चिकित्सा साथ—साथ— दार्शनिक सुकरात कहा करता था कि अगर मनुष्य केवल बलवान

Youtube पर @dravid bhara hindi को Subscribe करें और दबायें।

द्रविड़ भारत

11

अगस्त-2026

हो तो इसमें उसकी कोई विशेषता नहीं है, मृतक मनुष्य नहीं है, शवमात्र है शरीर ही शरीर है इसके उपरान्त कुछ नहीं। परन्तु जीवित मनुष्य के शरीर में और मन का अविच्छेद सम्बध होता है। दोनों को मिलाकर एक समझना होगा और एक को छोड़ कर दूसरे का विकास किया भी नहीं जा सकता। मस्तिष्क को उन्नत रखते हुए शक्ति को बलशाली करने वाला व्यक्ति सुख के मार्ग पर होता है। प्राकृतिक जीवन प्राकृतिक रहन—सहन तथा प्राकृतिक खानपान हमारे जीवन में सात्विकता लाकर हमें ऊपर उठाते है।

मन का संयम करके प्राकृतिक चिकित्सा दर्शन का अनुकरण करे उसे अपनावे तो निर्दयता, पशुविकता, वैश्वाविकता संसार से एकदम उठ जाये और पृथ्वी पर अमन और चैन हो जावें।

10. प्राकृतोपचार में उत्तेजक औषधियाँ के दिये जाने का प्रश्न ही नहीं है।

औषधि उपचार प्रणाली का सिद्धान्त है कि रोग बाहरी चीज है। जिसका शरीर पर आक्रमण हुआ करता है अतः शक्तिशाली से शक्तिशाली सााधन का प्रयोग करके उससे लड़ना चाहिए और उसे परास्त करना चाहिए। इसलिए डाक्टर और वैद्य विषैली दवाइयों जैसे पारा, अफीम, संखिया आदि का प्रयोग करके रोगो से निपटने का यत्न करते है। और इस बात का जरा भी ख्याल नहीं करते कि विष आखिर बिष ही है। चाहे उसकी मात्रा कम हो या अधिक वह हर हालत में जीवन के लिए घातक है। जिससे रोग घटने के बजाय दिन पर दिन गम्भीर होता जाता है। इसलिए प्राकृतोपचार में उत्तेजक औषधियों का प्रयोग आनावश्यक ही नहीं अपितु हानिकारक भी समझा जाता है लेखक टांसलाइटिस से बहुत पीड़ित रहता था प्राकृतिक चिकित्सा से स्वयं इलाज कर बिना दवा सेवन के पूर्ण स्वस्थ है। और पाँच वर्षो से बिना दवा के ठीक है। अतः दवाइयों के प्रयोग के बिना ठीक हुआ जा सकता है।

मधुमेह (Diabetes)

अक्सर पाचन संस्थान विशेषकर क्लोम ग्रंथि (Pancreas) के ठीक से काम

न करने से यह रोग होता है।

यह पढ़ने—लिखने वालों, आलसियों एवं केवल स्वादिष्ट भोजन करने के लिये जीने वालों का एक विशेष रोग है, जो शरीर को बहुत आराम देते हैं और उससे मेहनत का काम बहुत कम लेते हैं। श्रम जीवियों और स्त्रियों को यह रोग कम होता है। यह रोग अधिकतर चालीस वर्ष से ऊपर वाले आयु के बुद्धिजीवी पुरुषों में पाया जाता है। कब्ज इस रोग का प्रधान कारण है। 90 प्रतिशत मधुमेह के रोगी या तो मोटे हैं या मोटे रह चुके होते हैं। रोग बढ़ने के साथ उनका वजन भी घटना शुरू हो जाता है। इसमें शरीर की धमनियाँ कड़ी पड़ जाती है जिसकी वजह से इस रोग से 66 प्रतिशत मौतें होती है।

मधुमेह को प्रमेह, बहुमूत्र तथा पेशाब में चीनी आना भी कहते है।

मधुमेह की दो किस्में हैं। एक मे पेशाब में चीनी आती है। परन्तु दूसरे में चीनी बिल्कुल नहीं आती, केवल पेशाब ही अधिक होता है।

1. बिना चीनी वाला मधुमेह : इसको बहुमूत्र और अंग्रेजी में Diabetes Insipidus भी कहते हैं। इस रोग में पानी जैसा पेशाब अधिक मात्रा में और बार—बार आता है। यह रोग प्रायः अधिक परिश्रम करने के कारण होता हैं परन्तु स्नायु दौर्बल्य इस रोग का मुख्य कारण हैं अतः किसी प्रकार की मानसिक उत्तेजना होने पर यह रोग एकाएक प्रकाश में आ सकता है। शरीर के रोम कूप जब किसी कारण से बन्द प्रायः हो जाते हैं तो शरीर का तरल मल जो शरीर से पसीने के रूप में निकलता है बजाय रोमकूपों के रास्ते निकलने के गुदों में जमा होकर पेशाब के रास्ते बहुमूत्र के रूप में निकलने लगता है। शराब के अधिक प्रयोग करने, ठंड लगने तथा अधिक ठंडा जल सेवन करने आदि से भी इस रोग की उत्पत्ति हो सकती है।

बहुमूत्र रोग मे 24 घंटा में लगभग एक गैलन तक मूत्र शरीर के बाहर निकलता है।

चिकित्सा

इस रोग को दूर करने के लिये सर्व प्रथम पेट को साफ करने का उपाय होना चाहिये तत्पश्चात् शरीर के रोम कूपों को खोलने का। पेट साफ करने और कब्ज

दूर करने के लिये कम से कम एक सप्ताह तक रसाहार करना चाहिये और जब तक जरूरत हो गरम या ठंडे पानी का एनीमा लेना चाहिये। रात भर के लिये कमर की भीगी पट्टी भी लगानी चाहिये।

रोम कूपों को सक्रिय करने के लिये रोज दो बार नंगे कुर्सी पर बैठकर और कम्बल ओढ़कर 5 मिनट तक भाप स्नान लेना चाहिये या सूर्य स्नान। उसके बाद थोड़े ठंडे जल से जुस्ट का प्राकृतिक स्नान 10 मिनट या ठंडे जल से साधारण स्नान लेना चाहिये। सप्ताह में एक बार एक घंटा के लिये समूचे शरीर पर भीगी चादर की लपेट देनी चाहिये तत्पश्चात् शीतल घर्षण स्नान। प्रतिदिन हल्का व्यायाम करना अथवा खुली जगह में वायु सेवन करना भी नितान्त आवश्यक हैं।

क्षार धर्मी खाद्य पदार्थ जैसे फल, ताजी सब्जी तथा कच्चा ताजा दूध आदि का सेवन करना चाहिये। कागजी नींबू का रस मिश्रित जल प्रचुर मात्रा में पीना चाहिये। पहले कुछ दिनों तक गर्म पानी पीना चाहिये उसके बाद ठंडा। शरीर को गरम रखने के लिए गरम वस्त्र धारण करना चाहिये।

2. चीनी वाला मधुमेह : इस प्रकार के मधुमेह को अंग्रेजी में Diabetes Mellitus कहते हैं। यह मर्ज हजामे की खरीबी से होता है और बड़ी मुश्किल से जाता है। इस रोग के साथ अन्य कितने ही रोग चलते हैं, जिनमें मन्दाग्नि, बेहद भूख, बेहद प्यास, कब्ज, सिर—दर्द, सिर में चक्कर, नेत्र विकार, त्वचा की शुष्कता, शक्तिहीनता, मसूढ़ो का फूलना, दांत के रोग, मुंह से दुर्गन्ध का निकलना आदि मुख्य हैं। इस रोग के बढ़ जाने और पुराना पड़ जाने पर अधिक भयानक शारीरिक विकार, जैसे समस्त शरीर में खुजली, जल्दी न अच्छा होने वाले फोड़े, कारबंककल, शरीर के रोमकूपों का बन्द हो जाना, फेफड़ों के विकार, राज्यक्ष्मा, स्नायुविकार, अंधापन, मूत्रद्वार में जलन, मूर्च्छा तथा एक्जिमा हो जाते हैं।

इस रोग के रोगी का पेशाब साफ, हल्का, पीलापन लिये हुये गाजयुक्त होता है उसे बोतल में रखने से नीचे कोई चीज नहीं जमती। परन्तु उसमें मीठी या खट्टी

Youtube पर @dravid bharat hindi को Subscribe करें और दबायें।

द्रविड़ भारत

12

अगस्त-2026

बू आती है। रोगी को दिन रात में 2–5 किलो तक पेशाब होता है जिसमें 50 ग्राम तक चीनी होती है। चिन्ता, क्रोध तथा भय आदि मानसिक विकारों के कारण रोग के उपर्युक्त लक्षणों में असाधारण वृद्धि हो जाती है।

यह रोग धीरे–धीरे जड़ जमाता है वजन कम होने लगता है शरीर सूखता जाता है कमजोरी बढ़ती जाती है तथा शरीर का तापक्रम बढ़ जाता है। इस रोग में प्लीहा और यकृत अपना काम पूरी तरह नहीं कर पाते और पाचक रस पैदा करने वाली पेन्क्रियाज (क्लोम) आदि ग्रन्थियों से आवश्यक मात्रा में पाचक रस नहीं निकलता। फलतः भोजन ठीक से नहीं पचता और उसके श्वेतसारीय भाग के शर्करा में परिणित होने पर जब वह रक्त द्वारा शरीर के उपयोग के लिये प्लीहा में लाया जाता है तब प्लीहा की शिथिलता के कारण रक्त में अनावश्यक मात्रा में शर्करा बच रहती है जिसे गुर्दे पेशाब के रास्ते शरीर के अन्य तरल विषों के साथ बाहर निकाल देने के लिये मजबूर होते हैं। मूत्र के साथ इस प्रकार शर्करा का आना ही मधुमेह कहलाता है। यहाँ यह जान लेना चाहिये कि जो कुछ हम खाते हैं वह पेट में जाकर पहले शर्करा का रूप धारण करता है। जिसका शोषण करके ही शरीर शक्ति एवं गर्मी प्राप्त करता है। परन्तु यही शर्करा जब बिना शरीर के काम आये ही मूत्र के साथ बहने लगती है तो शरीर दिन–दिन दुर्बल होने लगता है और अन्त में नष्ट हो जाता है।

अधिकांश मोटे व्यक्ति इस रोग से ग्रस्त होते हैं तथा 20 प्रतिशत मधुमेहियों में यह रोग पैतृक होता है।

चिकित्सा

आरम्भ में यदि रोगी अधिक दुर्बल न हो तो उसे दो या तीन दिन का उपवास एनिमा के साथ अवश्य करना चाहिये। फिर उपवास तोड़ने के बाद 10 दिन तक अन्न का सर्वथा त्याग करके केवल उबली और कच्ची हरी शाक तरकारियों या उनके सूप (रस) एवं सन्तरे, टमाटर, मकोय, मौसम्बी, अनानास, अंगूर, आम, जामून, अनार, अमरुद, नासपाती, सेब, पकी गूलर आदि फलों या उनके रस पर रहना चाहिये इससे पेशाब में चीनी का जाना तो कम

होगा ही साथ ही साथ शरीर के अन्दर वह शक्ति जाग्रत होगी जो चीनी को शरीर के अन्दर जज्ब करती है और उसे बिना उपयोग बाहर निकल जाने से रोकती है। उसके बाद एक मास तक सवेरे फलों का जूस या बेल की कोमल पत्तियों को कूटकर उसका 10 ग्राम जूस नाश्ता के रूप में, दोपहर को चोकरदार गेहूँ के आटे की रोटी या गेहूँ अथवा जौ का दलिया और उबली तरकारी, तीसरे पहर एक गिलास मक्खन निकला हुआ मट्ठा, तथा शाम को केवल एक गिलास फल–जूस लेना चाहिये।

साधारण स्नान शीतल जल से करना चाहिये। दुर्बलता अधिक हो तो कुछ दिनों तक यह स्नान गुनगुने पानी से भी किया जा सकता है। परन्तु स्नान के प्रथम मंद–धूप में बैठकर सरसों के तेल से समूचे शरीर की खूब अच्छी तरह मालिश जरूर करा लेनी चाहिये। स्नान के समय पहले मेरुदण्ड पर 5 मिनट तक ठंडे पानी की धार छोड़नी चाहिये, फिर स्नान कर लेना चाहिये और शरीर पर के पानी को हाथों की हथेलियों से रगड़–रगड़ कर सुखा देना चाहिये।

लगातार चालीस दिनों तक उपर्युक्त चिकित्सा–क्रम चलाने से मधुमेह जरूर दूर हो जाता है। और यदि रोग बढ़ जाने के कारण चालीसवें दिन वह पूर्णरूप से न चला जाय तो फिर उसी चिकित्सा क्रम को दोहराना चाहिये, ताकि रोग की जड़ बिल्कुल कट जायें।

जब पेशाब में चीटियाँ न लगे तो समझिये उसमें चीनी नहीं है।

यदि रोगी जल्दी अच्छा होना चाहता है तो निम्नलिखित प्रयोग उपर्युक्त चिकित्सा– क्रम में और जोड़ देने चाहिये।

1. प्रातःकाल शौच के बाद ताजे पानी का एनीमा ले उसके बाद आधे घंटे तक पेड़ू पर गीली मिट्टी की पट्टी बांधे, या 20 मिनट तक कटि–स्नान करें। फिर शक्ति भर व्यायाम करें या शुद्ध वायु में तेजी से टहले। इससे कब्ज टूटेगा।
2. शाम को या तीसरे पहर मेहन–स्नान करे। उसके बाद शक्ति भर थोड़ा टहले। इससे जीवनी शक्ति की वृद्धि होगी।
3. तलपेट पर सेंक देकर या मर्दन करके

रात भर के लिये कमर की गीली पट्टी लगावें।

4. नारंगी रंग की बोतल का सूर्य तप्त जल दो हिस्सा तथा आसामानी रंग की बोतल का एक हिस्सा मिलाकर 50–50 ग्राम की 4 खुराके प्रतिदिन पान करें।

इस परिवर्द्धित चिकित्सा–क्रम से केवल 15 दिनों में ही पेशाब में चीनी आना बंद हो जायेगा।

उपर्युक्त के अतिरिक्त, शारीरिक और मानसिक विश्राम इस रोग में बहुत जरूरी है, खुली हवा में रहना और गहरी श्वांस की कसरते आवश्यक हैं, साथ ही कागजी नीबू का रस जल में निचोड़ कर दिन में कई बार पीना चाहिये। ताजे आवंले के रस में शुद्ध शहद चाटना भी लाभ करता है। जामुन की गुठली का चूर्ण 20 ग्राम की मात्रा में या केवल चार–चार जामुन की हरी पत्तियाँ दिन में दो बार चबाकर खाना उपकारी होता है तथा सप्ताह में एक दिन उपवास और मट्ठा का कल्प मधुमेह को दूर करने में अमोघ सिद्ध होता है इस रोग में 24 घंटों में 8 गिलास पानी पीने से भी रोग निवृत्ति जल्दी होती है।

पथ्य–परवल, करेला, टमाटर, जामुन, खीरा, ककड़ी, पपीता, चना दूध में भिगोकर शहद के साथ, जौ और चना के बराबर मिले आटे की रोटी, पालक, बथुआ, चौलाई, लौकी, नेनुआ, फालसा, खिन्नी, दही, पका आम, सहिजन, तरोई, मूली पत्तागोभी धनियाँ की पत्ती, मेथी का साग, पोदीना, सेम, प्याज का साग, गांठ गोभी, मट्ठा चोकरदार गेहूँ का आटा, ज्वार, सावां, अंकुरित मूंग, चना आदि।

परहेज–आलू, चावल, मटर, गाजर, काजू, बादाम, अखरोट, साबूदाना आदि श्वेतासार प्रधान खाद्य, सब तरह के मीठे फल, मेवे जैसे खजूर, किशमिश, अंजीर, मुनक्का, खुमानी, शलजम, तेल, मसाला, चीनी, अधिक नमक, मिठाई, गुड़ मांस–मछली, अण्डा, चाय, काफी, तम्बाकू आदि नशीली वस्तुएं अधिक भोजन, 6–7 घंटे से अधिक सोना दिन में सोना, भ्रम, क्रोध, चिन्ता आदि मानसिक विकार, घी दूध तथा मक्खन आदि।

साभार : प्राकृतिक आयुर्विज्ञान आयोग सेवा प्रकाशन

Youtube पर @dravid bhara hindi को Subscribe करें और दबायें।

द्रविड़ भारत

13

अगस्त–2026



प०स० NCSC-K/Accounts-S/Office Order/2026-27/

Government of India/भारत सरकार

Ministry of Labour & Employment/श्रम एवं रोजगार मंत्रालय,

Directorate General of Employment/रोजगार महानिदेशालय

National Career Service Centre for SC/STs/नेशनल करियर सर्विस सेन्टर फॉर एस०सी०/एस०टी०

NCSC for DA Building, B-Wing, 1st Floor/एन०सी०एस०सी० फॉर डी०ए० बिल्डिंग, बी-विंग, प्रथम तल

NSTI Campus, Udyog Nagar, Kanpur, UP-208022/एन०एस०टी०आई० परिसर, उद्योग नगर, कानपुर, उ०प्र०-208002

E-mail : ncscscstkn@gmail.com • Mob. No.: 7988193472



निःशुल्क कोर्स अनुसूचित जाति/जन जाति हेतु

The detail of Courses/Training Programmes with eligibilty criteria is as under :-

S. No.	Name of the courses	Duration of the courses	Age Limit	Minimum Qualification	Maximum Family Income	Books & Stationery & Stipend Rs. 1000/- Per month	Likely to be Commenced
1	Special Coaching Scheme (Slenography)	01 Year	18-27 years	10+2 Passed	Rs. 3.00 lakh per annum	Free	1 July
2	'O' Level Computer Software training through NIELIT	01 Year	18-30 years	10+2 Passed	Rs. 3.00 lakh per annum	Free	1 July
3	'O' Level Computer hardware training through NIELIT	01 Year	18-30 years	10+2 Passed	Rs. 3.00 lakh per annum	Free	1 July
4	Office Automation Accounting and Publishing Assistant through NIELIT	01 Year	18-30 years	10+2 Passed	Rs. 3.00 lakh per annum	Free	1 July
5	Computer Application and Business Accounting Asscoiate through NIELIT	01 Year	18-30 years	10+2 Passed	Rs. 3.00 lakh per annum	Free	1 July
6	Cyber Secured web Development Associated through NIELIT	01 Year	18-30 years	10+2 Passed	Rs. 3.00 lakh per annum	Free	1 July

Desirous SC/STs jobseekers may visit www.ncs.gov.in or www.doe.gov.in and submit their application to the National Career Service for SC/STs where the candidate is interested for participating in the above said program. Candidates would be considered for only one course. The candidates may indicate their choice of courses in order of their preferences

(राज कुमार)

उप-क्षेत्रीय रोजगार अधिकारी
नेशनल करियर सर्विस सेन्टर, कानपुर

Mob. No. 7988193472

Youtube पर @dravid bhara hindi को Subcribe करें और दबायें ।

द्रविड़ भारत

14

अगस्त-2026

****जल अमूल्य निधि है****



****जल ही जीवन है****

जलकल विभाग, नगर निगम, कानपुर

जल संरक्षण के हित में उपभोगताओं से अपील

क्रम सं०	क्या करें	क्रम सं०	क्या न करें
1-	जलकल विभाग द्वारा आपूर्ति अथवा इण्डिया मार्क-।। हैण्डपम्प का पानी पानी पीने में प्रयोग करें।	1-	अनाधिकृत रूप से ठेलियों/ट्राली पर पानी बेचने वालों के पानी का प्रयोग न करें।
2-	आपकी पाइप लाइन नाली अथवा किसी अन्य गन्दे स्थान से हो कर जा रही हो तो पंजीकृत प्लम्बर से उसका मार्ग परिवर्तित करा लें अथवा इस पर केंसिंग पाइप अवश्य लगावें। सर्विस पाइप लाइन पुरानी अथवा क्षतिग्रस्त हो गयी हो तो उसे तत्काल बदलवा लें। अन्यथा गन्दा पानी पेयजल को प्रदूषित करेगा।	2-	पानी की लाइन में बूस्टर पम्प लगा कर, सीधे पानी न लें। यदि आवश्यक हो तो टब अथवा टैंक में जलकल के नल से पानी एकत्र कर उसे बूस्टर पम्प द्वारा ऊपर चढ़ायें।
3-	हैण्डपम्प का प्लेट फार्म साफ रखें।	3-	हैण्डपम्प के चारों तरफ गन्दा पानी एवं गन्दगी न एकत्र होने दें।
4-	गन्दा पानी आने पर जलकल विभाग के क्षेत्रीय कार्यालय अथवा जलकल विभाग के कन्ट्रोल रूम नं०-9235553827 / 26 पर फोन कर अवगत करायें।	4-	सीवर मेनहोल में कूड़ा करकट न डालें तथा मेनहोल खुला होने पर तत्काल कन्ट्रोल रूम को सूचित करें।
5-	जलकल विभाग की पाइप लाइन में लीकेज/सीवर समस्या होने पर तत्काल जलकल विभाग के कन्ट्रोल रूम नं०-9235553827 / 26 पर इसकी जानकारी दें।	5-	पानी लेने के बाद नल/स्टैण्ड पोस्ट खुला न छोड़ें। पानी का भण्डारण करें व अपव्यय रोकें।
6-	पानी एकत्र करने के लिये ढक्कन युक्त साफ बर्तन का प्रयोग करें।	6-	पानी के बर्तन में हाथ न डालें, पानी निकालने के लिये लम्बे हैंडल के बर्तन का प्रयोग करें।

जन सामान्य के अच्छे भविष्य हेतु जल-संरक्षण

- 1— बैठकों सेमीनारों प्रदर्शनों एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में जहाँ पेयजल आवश्यक हो, एक लीटर के पानी के बोतल के स्थान पर 250—300 मिली० के पानी के बोतल का इस्तेमाल किया जाये, जिससे इस अमूल्य धरोहर को अपव्यय से बचा जा सके।
- 2— जन सामान्य पानी पीने हेतु छोटे बर्तन / गिलास का उपयोग करें। प्रायः यह देखा जाता है कि लोग बड़े गिलास / बर्तन में पानी लेकर एक या दो घूँट पानी पीने के बाद शेष पानी फेंक देते हैं। इस लिये उतना ही पानी लिया जाये जिसे पिया जा सके।
- 3— प्रायः यह देखा जाता है कि लोग पीने के पानी (ट्रीटड) से अपने लान, किचेन, गार्डन, फूलों की क्यारियों की सिंचाई तथा गर्मियों में घरके सामने की सड़क भिगाते हैं ताकि धूल न उड़े। जनमानस से अनुरोध किया जाता है कि पेयजल की महत्ता को पहचाने एवं इस अमूल्य धरोहर / संसाधन को अपव्यय से बचने का प्रयास करें।
- 4— ताजा पानी के उपयोग हेतु सायं / विगत दिवस में संरक्षित पीने के पानी को न फेंके / बर्बाद न करें उसे अन्य कार्य में उपयोग में लायें।

नोट – जलकल/जलमूल्य/सीवर कर के बिलों का भुगतान समय से कर छूट का लाभ प्राप्त करें। बिलों का भुगतान जलकल विभाग की वेबसाइट www.jalkalkanpur.in पर आन लाइन भी जमा किये जा सकते हैं।

सचिव - ईश्वर सिंह

महाप्रबन्धक - आनन्द कुमार त्रिपाठी

Youtube पर @dravid bhara hindi को Subscribe करें और 🔔 दबायें ।

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....

सी. के. गौतम
डिप्टी कमिश्नर राज्यकर विभाग
बहराइच

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....

श्रीकांत सिंह रंगीला
अधिशाली अभियन्ता
केस्को कानपुर
मो० : 9411887808

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....

रामनरेश धर्मेन्द्र सोनकर
महासचिव (आई.टी. सेवा) अध्यक्ष
इनकम टैक्स एस.सी./एस.टी. एम्पलाइस वेलफेयर एसोसिएशन, कानपुर
मो. 7599101755

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....

सुहैब अनवर अन्सारी
वरिष्ठ प्रबन्धक उत्पादन
उ. प्र. स्टेट कारपोरेशन लि.
जी.टी. रोड, कानपुर उ.प्र.

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....

अरविन्द कुमार
प्रबन्धक उ. प्र. कॉपरेटिव बैंक लि.
शाखा डी.ए.वी. कालेज, कानपुर
मो.: 9956976995

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....

गीता कुमारी
प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय श्रमायुक्त उ.प्र. जी.टी. रोड कानपुर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....

रोशन लाल
फोरमैन सिविल इंजी. विभाग
हरकोर्ट बटलर प्राविधिक विश्वविद्यालय, कानपुर
मो० : 9839791024

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....

अजय कुमार
लिपिक
कानपुर विकास प्राधिकरण, कानपुर, उ०प्र०
मो० : 7905305856

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....

 **रामचरन**
पम्प आपरेटर
कानपुर विकास प्राधिकरण
मो० : 9984251800

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....

 **प्रतिमा रानी**
प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय श्रमायुक्त उ०प्र० जी०टी० रोड कानपुर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....

धर्मेन्द्र कुमार
कनिष्ठ लिपिक
मो.: 9621999187
जोन-1 नगर निगम कानपुर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ.....

 **सुरेश चन्द्र**
डिपो मनैजर/नाजीर
उ०प्र० राज्य हथकरघा निगम लि० कानपुर